प्रकाशकीय

विगत ३२ वर्षों से जय-तिथि-पत्रक का प्रकाशन प्रतिवर्ष हो रहा है। इसी क्रम में राजलदेसर में आयोजित १४७वें मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर संवत् २०६८ का जय-तिथि-पत्रक सुधी पाठकों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। जय-तिथि-पत्रक में ज्योतिषीय सूचनाओं, विशेष पर्वों, अनुष्ठानों के साथ संस्था की विभिन्न गतिविधियों आदि से संबंधित उपयोगी सामग्री संकलित है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार तेरापंथ दर्शन मनीषी मुनिश्री सुमेरमलजी ('लाडनूं') ने तिथि-पत्रक सम्पादन के गुरुतर दायित्व का सम्यक् निर्वहन करते हुए दैनंदिन आवश्यकता की ज्योतिषीय सूचना-सामग्री प्रस्तुत करने की कृपा की है, उसके लिए हम मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। श्री जीतमल नाहटा (कोलकाता) का भी संकलन में सहयोग मिला है। इसके व्यवस्था पक्ष में शासनसेवी श्री रतनलाल चौपड़ा का निरंतर सहयोग प्राप्त हो रहा है। इस वर्ष २०००० प्रतियों का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।

जय-तिथि-पत्रक के प्रकाशन के लिए हमें अनेक महानुभावों का विज्ञापन सहयोग प्राप्त हुआ है। उनका उदार सहयोग-भाव संस्था की प्रवृत्तियों को गतिशील करता है। हम उन सभी सहयोगियों की सहयोग-भावना के लिए हार्दिक आभारी हैं जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में इस कार्य में सहयोगी बने हैं।

विश्वास है कि जय-तिथि-पत्रक की सामग्री सभी उपयोगकर्ताओं के लिए अधिकाधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

दिनांक : ११ दिसम्बर २०१०

मंत्री

जितेन्द्रकुमार नाहटा

जैन विश्व भारती, लाडनूं

राजलदेसर और तेरापंथ

थली के धोरों के बीच कटोरेनुमा आकार में बसा चूरू जिले का राजलदेसर कस्बा (लगभग) 550 से 600 वर्ष पूर्व का बसा हुआ है। प्राचीन बारह बासों वाले राजलदेसर को कब और किसने बसाया इसकी पुख्ता जानकारी का अभाव है। कहते हैं—'1545 सुद बैशाख सुमेर, थावर बीज थरपियो बीको बीकानेर' पर राजलदेसर की धरती तो उससे बहुत पहले आबाद थी। बड़े-बुजुर्ग इसके तार 'राजा कोठी' के 'ताँबे के तालाब' से जोड़ा करते थे जिसे हजारों वर्ष पूर्व के किसी राजा तानसेन (अकबर कालीन नहीं) ने बनवाया था।

प्राचीन कस्बा

वर्तमान रामद्वारा बास में माताजी मन्दिर स्थल व अगल-बगल के आवासीय भूखण्डों पर नींव खोदते समय हजारों वर्ष पुरानी जैन तीर्थंकरों की प्रस्तर प्रतिमाओं का निकलना प्रमाणित करता है कि यह क्षेत्र बहुत पहले अच्छी सभ्यता के साथ आबाद था तथा आज भी नये भवनों के निर्माण करने से पहले खुदाई में बीस फुट तक चूनें, पत्थर, कंकर की दीवारें निकलना इसकी प्राचीनता की गाथा गाती है। सं. 1545 से सदियों पूर्व चौहानों की खाँप मोयलों का छापर के जनपद पर वर्चस्व हुआ करता था और उसी जनपद में वर्तमान राजलदेसर के बारह बास हुआ करते थे। इन्हीं बारह बासों में हुआ करता था एक 'कल्याणिया—बास' और इसी बास में वर्तमान 'दस्सूसर' से होकर ओसियां (जोधपुर) से आए बैद परिवार बसे थे।

जातिगत बही—भाटों की बहियाँ इसके इतिहास की साक्षी होने के साथ-साथ कस्बे के मुख्य बाजार में स्थित सम्वत् 1421 में स्थापित सच्चियाय माता मन्दिर, श्रीआदिनाथ जैन मन्दिर सम्वत् 1598 में तथा गोशाला के उत्तर में छोटे से देवालय में रखी पत्थर की सती माता की प्रतिमा पर अंकित 'सम्वत् 1581 शुक्रदिने घटिका उपरान्त 11 माघ देवलोक भवन्तु रावड़ वसी राव स्त्री (श्री) बीकासुत राजसीजी देवलोक भवन्तु सती सोढी रत्नादेसहत्' लेख इस बात का प्रमाण है कि राजलदेसर प्राचीन कस्बा है। स्पष्ट है कि यह काल बीकानेर बसने से 125 वर्ष पूर्व का है।

बताते हैं कि 'बचना रा बाण खा, बुकिया रे पाण' विजय पताका फहराने हेतु राव बीका ने अमले-असले के साथ जोधपुर का परित्याग कर दिया। नागौर पड़ाव के पश्चात् उनके दल के दो भाग हो गये। एक भाग में राव बीका और उनके सहयोगी तो दूसरे भाग में कांधल बीका एवं राजसी उत्तरी-पूर्वी कोने में बढ़े। राजसी के साथ दस्सूजी थे जिन्होंने दस्सूसर बसाया और इसके बाद बारी आयी बारह बासों की जिन्हें फतह करते हुए राजसी ने वर्तमान डांगिया बैदों की हवेली स्थल पर पड़ाव डाल ठाकुरशाही (गढ़नुमा) मकान बनवाकर 'राजाणैं बाजा बाजिया' का गीत चलवा दिया। उनके जुझारू जहाँ-जहाँ रण-खेत हुए वे 'भौमिया', 'भैरूं' बने। जिनके पत्थर पर तेल स्थापित कर कल तक तेल चढ़ाया जाता था तो कइयों की आज भी पूजा-अर्चना होती है।

कुछ ऐसा भी कहते हैं कि—सम्वत् 1595 में शिवदासजी मोयल को मारकर राजा रायसिंहजी ने तत्कालीन राजलदेसर क्षेत्र को बीकानेर राज्य के अधीन कर दिया।

तो कुछ कहते हैं कि—राजा जयसिंह ने राजलदेसर बसाया। इसी क्रम में ही

बाजार के बीचोबीच स्थापित श्रीआदिनाथ मन्दिर की पाषाण प्रतिमा पर उत्कीर्ण सम्वत् 1492, धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण सं. 1521 जिनको अजमेर जा बसे लोढा परिवार द्वारा सं. 1584 व सं. 1598 में प्रतिष्ठित करवाने का उल्लेख है, जो राजलदेसर की बीकानेर से पूर्व की संस्कृति की झलक देते हैं तो देवगुप्त द्वारा सं. 1551 में स्थापित नागौर के उपकेश गच्छ व उसी के आचार्य लोकागच्छ कल्याणदास का राजलदेसर के सुराणा शिवदास की पत्नी कुशला का पुत्र होना कालक्रम की कड़ी को जोड़ता है।

राज-संचालन में अर्थ की अहम भूमिका होने के कारण अर्थ-प्राप्ति एवं उसके नियोजन हेतु खजांची का पद सिद्ध-हस्त व्यक्ति के हाथों में होना आवश्यक है। इस हेतु बीकानेर राज-संचालन के साथ-साथ राजलदेसर के बैद परिवार की अहम भूमिका रही है। फलतः मूंथा परिवार और जेसराज जैचन्दलाल बैद का इतिहास राजलदेसर इतिहास के घटनाक्रम को इंगित करता है। इसी कालक्रम में बैद परिवार के हरसिंह—रायसिंहजी के दीवान हुआ करते थे और आक्रमणकाल में राजकुमार जयमालजी के साथ जुझारूजी की धड़ का लड़ते रहना एक रोमांचकारी घटना है।

राजलदेसर एवं तेरापंथ

राजलदेसर के मुख्य बाजार में स्थित प्राचीन जैन मन्दिर इस बात का प्रमाण है कि यह कस्बा जैन धर्मावलम्बियों का गढ़ रहा है। सं. 1837 में बोरावड़ से चूरू पधारते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु ने भी इस धरा को अपने पवित्र-पावन चरणों से स्पर्श किया था। वर्तमान में यहाँ तेरापंथी समाज के करीब साढ़े आठ सौ परिवार हैं। आज से करीब डेढ़ सौ वर्ष पूर्व तेरापंथ के तृतीय आचार्य श्री रायचन्दजी ने यहाँ के बच्छावत परिवार की साध्वी उमांजी को जैन भागवती दीक्षा प्रदान की थी। अष्टमाचार्य कालूगणी के काल में करीब 80 वर्ष पूर्व श्री लालचन्द बरड़िया के पुत्र तनसुखदास तथा श्री बींजराज बैद के पुत्र अमोलकचन्द ने मुनि दीक्षा ग्रहण की। सन् 2001 तक यहाँ से 13 मुनि तथा 57 साध्वी की दीक्षा हो चुकी है। अब तक कुल 80 साधु-साध्वियाँ राजलदेसर से दीक्षित हो चुके हैं। मुनि अमोलकचन्दजी ने सर्वप्रथम पंजाब में लाहौर तक की यात्रा की।

यहाँ सं. 1958 में आचार्य डालगणी ने, सं. 1975 में कालूगणी ने तथा सं. 1998 व 2050 में आचार्य तुलसी ने अपने शिष्यों के साथ चातुर्मास किया। सं. 1956 में आचार्य डालगणी, सं. 1967, 1974, 1979 व 1982 में आचार्य कालूगणी तथा सं. 2005 व 2035 में आचार्य तुलसी के सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया गया।

तेरापंथ धर्मसंघ की चतुर्थ साध्वीप्रमुखा जेठांजी का कार्तिक शुक्ला 10, सं. 1981 तथा पंचम साध्वीप्रमुखा साध्वी कानकंवरजी का भाद्रपद कृष्णा पंचमी, सं. 1993 को राजलदेसर में महाप्रयाण हुआ।

माघ शुक्ला सप्तमी, सं. 2035 के मर्यादा महोत्सव पर डागा की बाड़ी में आयोजित मर्यादा महोत्सव समारोह में आचार्य तुलसी ने महाप्रज्ञ को युवाचार्य के पद पर प्रतिष्ठित किया। सं. 2050 के ऐतिहासिक चातुर्मास में आचार्य तुलसी को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

चातुर्मास प्रवास, मर्यादा महोत्सव के आयोजन के साथ-साथ समय-समय पर यहाँ तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों व साधु-साध्वियों के पदार्पण से यहाँ की

जनता को दर्शन एवं धर्मलाभ निरन्तर प्राप्त होता रहा है। यह क्षेत्र गत सात दशकों से साधु-साध्वियों की चरण-रज से धर्म की ज्योत निरन्तर जला रहा है। तीस वर्षों से यहाँ लगातार वृद्ध साध्वी सेवाकेन्द्र स्थापित है।

इस धरा पर तेरापंथ धर्मसंघ के प्रतिभाशाली तत्त्वज्ञ श्रावक चान्दमलजी बैद, चन्दनमल जी बैद, चम्पालालजी चिण्डालिया (मुनि श्री चिदानन्दजी) हुए हैं।

सार्वजनिक कार्य

यहाँ जन्म लेने वाले व्यक्ति ने चाहे देश के किसी भी कोने में कार्य करते हों लेकिन उन्होंने जन्म भूमि को याद रखा। विविध सार्वजनिक संस्थाओं का गठन करके तथा अपने पूर्वजों के नाम पर ट्रस्ट बना कर शिक्षा, चिकित्सा, अतिथि भवन निर्माण कार्यों में अपना योगदान देकर जुड़े रहे। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ कन्या मण्डल, तेरापंथ किशोर मण्डल, अणुव्रत समिति आदि संस्थाएँ कस्बे के अनेक सेवा कार्यों में संलग्न है।

यहाँ नगरपालिका की स्थापना आजादी से पहले सन् 1922 में ही हो गयी थी पर कस्बे का विकास आजादी के बाद ही हुआ है। राजलदेसर के विकास में यहाँ के तेरापंथी परिवारों का विशेष योगदान रहा है। प्रथम नगरपालिका के गठन का श्रेय तेरापंथी श्रावक भंवरलाल बैद को मिला जिसमें उन्हें प्रथम अध्यक्ष के रूप में चुना गया।

यहाँ के जैन पुस्तकालय में प्राचीन जैन ग्रंथों के दुर्लभ संकलन के साथ-साथ नवीन साहित्य भी उपलब्ध है। सन् 1917 में स्थापित शान्ति लायब्रेरी साहित्य के क्षेत्र में रुचि रखने वालों के लिए वरदान साबित हो रही है।

'राजाणों राजस करे, मोजा करे मजूर'।

'धरती के 28 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 74½ डिग्री पश्चिमी देशान्तर पर बसा—राळदे'।

थी कभी—'अबड़े मारगिया री धरती, काळे कोसां री धरती, टेढ़ी-मेढ़ी डगरया, डोळा—गाळा री धरती।'

पर अब तो सब कुछ आसान। कस्बा रेलमार्ग से देश व प्रदेश की राजधानी से जुड़ा हुआ है। वर्तमान में इस क्षेत्र पर बड़ी रेल लाइन का कार्य द्रुतगति से चल रहा है। वहीं राष्ट्रीय राजमार्ग 11 पर आबाद होने के कारण पथ परिवहन की पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध है।

कस्बे में सभी धार्मिक त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाएं जाते हैं। यहाँ साम्प्रदायिक सौहार्द्र अनुकरणीय है। अणुव्रत समिति द्वारा समय-समय पर आयोजित कार्यक्रम विशेष प्रभावी रहते हैं। सभी जाति-वर्ग-सम्प्रदायों के व्यक्ति मिलकर भाग लेते हैं।

हमारी राजलदेसर की धरा का यह परम सौभाग्य है कि तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य बनने के बाद आचार्यश्री महाश्रमण का पहला मर्यादा महोत्सव यहां हो रहा है। पूरे कस्बे में उत्सव का सा माहौल निर्मित हुआ है। राजलदेसर का अतीत एवं वर्तमान गौरवशाली रहा है। परमपूज्य आचार्यवर की कृपापूर्ण शुभ दृष्टि से क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल से उज्ज्वलतर बनता रहेगा, इसी आशा व विश्वास के साथ राजलदेसर का श्रावक समाज पूज्य चरणों में श्रद्धानत है।

आचार्य श्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति, राजलदेसर

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

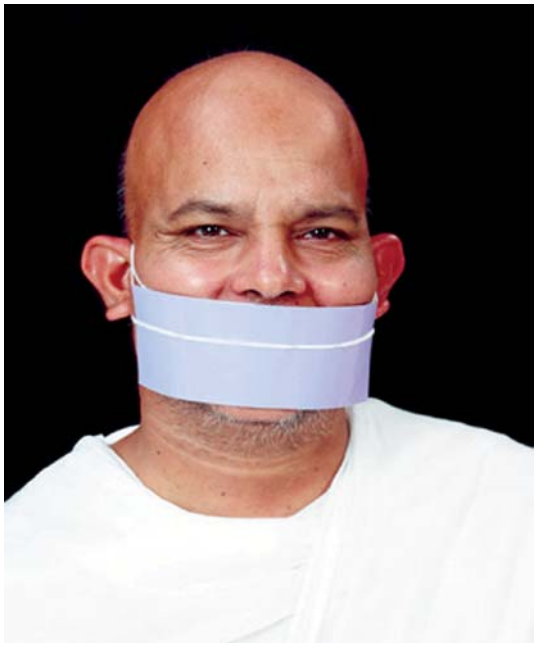

श्रद्धावनत : जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

परोपकार को समर्पित साधक के ५० वर्ष

ACHARYA MAHASHRAMAN AMRIT MAHOTSAV

Jain Shwetamber Terapanthi Mahasabha

Terapanth Sabhabhavan, Manu Market, 2nd Floor, M.G. Road,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

Tel. : 91-7738905050, 7666055050, 9024605050

Regd. Office : **Jain Shwetamber Terapanthi Mahasabha**,
3, Portugues Church Street, Kolkata-700001

Email : mail@acharyamahashraman.in

Website : www.acharyamahashraman.in

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

करणीय कार्य

पंचाचार की आराधना

ज्ञानाचार

1. साधु-साध्वियों, समण श्रेणी द्वारा उत्तराध्ययन का अर्थ सहित वाचन।
2. सप्ताह में एक बार श्रुत सामायिक का प्रयोग। (यथासंभव गुरुवार को)
3. महीने में एक दिन लेखन, वक्तृत्व, गायन के क्षेत्र में दक्षता बढ़ाने के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन। (यथासंभव शुक्ला 9 को)
4. अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं पर कार्यशालाओं का आयोजन।
5. निर्धारित विषयों पर साहित्य सृजन का प्रयास।
6. आचार्य महाश्रमण द्वारा रचित साहित्य का व्यवस्थित प्रकाशन और प्रसार।
7. विश्वविद्यालयों में जैन दर्शन पर व्याख्यान।
8. श्रावक समाज द्वारा श्रावक संबोध : कण्ठस्थ व वाचन।

दर्शनाचार

1. तेरापंथी परिवारों की सार-संभाल का अभियान। आस्था का दृढ़ीकरण।
2. दर्शनाचार से संबंधित आचार्य प्रवर की विशेष प्रवचनमाला का आयोजन।

चारित्राचार

1. अधिकाधिक व्यक्तियों को बारहव्रती बनाने का प्रयास।
2. नशामुक्ति की प्रेरणा। (विशेष रूप से समाज में)

तप आचार

1. तप-पचरंगी का विधिवत् प्रयोग।
2. जप-नमस्कार महामंत्र।

वीर्याचार

1. ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप में सलक्ष्य शक्ति का नियोजन।
2. सेवा एवं कला के क्षेत्र में विशेष पुरुषार्थ।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

समय : वैशाख शुक्ला 9 वि.सं. 2068 से वैशाख शुक्ला 9 वि. सं. 2069 तक

मार्गदर्शन : महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

आयोजक : जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

चरण	तिथि	दिनांक	स्थान
प्रथम	वैशाख शुक्ला 9 वि.सं. 2068	12 मई, 2011	कांकरोली
द्वितीय	भाद्रपद शुक्ला 12 वि.सं. 2068	9 सितम्बर, 2011	केलवा
तृतीय	माघ शुक्ला 6 वि.सं. 2068	29 जनवरी, 2012	आमेट
चतुर्थ	वैशाख शुक्ला 9 वि.सं. 2069	30 अप्रैल, 2012	बालोतरा

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

परोपकार को समर्पित
साधक के 50 वर्ष

श्रद्धाप्रणत

सिंघी परिवार

श्रीडूंगरगढ़
जलगांव

श्रद्धालु स्व. रेखचंदजी सिंघी
की पुण्य स्मृति में

श्रद्धा, समर्पण एवं निष्ठा जिनका जीवन रस
उस पावन पथप्रेरक को
पूनमचंद अशोक कुमार एवं
समस्त सिंघी परिवार का नमन्

अशोक सिंघी (किरण सिंघी) मोबाइल नं. ९९९९९ ३३००१
श्रीडूंगरगढ़–जलगांव–दिल्ली–मुम्बई–चेन्नई

Acrylics (India)

3002/2, Chunamandi
Paharganj, New Delhi-55
www.acrylicsindia.com

Prakash Acrylic (P) Ltd.

70, Thola Muthiappan St (Ist Floor)
Chennai-1

Jyoti Plastics

5, Ram Mandir Road, Goregaon (w)
Mumbai-4

आलोचना का जवाब जबान से नहीं महत्त्वपूर्ण कार्यों से दो।
–आचार्य महाश्रमण

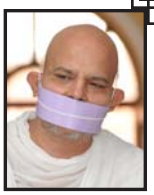

आचार्यश्री महाश्रमणजी के वर्ष २०१२ के
अमृत भूमि आमेट मर्यादा महोत्सव पर सादर आमंत्रण

❋

'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' भंवरलाल लोढ़ा
पारसमल, पुखराज, गजेन्द्र लोढ़ा
'कल्याण मित्र' सलिल लोढ़ा
आमेट-मुलुण्ड (मुम्बई)

भाग्य की चिन्ता नहीं अच्छा पुरुषार्थ करो, भाग्य स्वतः अच्छा हो जाएगा।

–आचार्य महाश्रमण

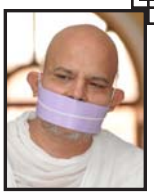

स्व. लालचंद केशरीचंद सिंघी की पुण्य स्मृति में

फतेहचंद तरुण कुमार सिंघी

(बीदासर–इन्दौर)

तरुण इन्टरप्राइजेज

५८१/५, एम.जी. रोड

३०६, बंशी ट्रेड सेन्टर

इन्दौर ४५२००१

फोन : ०७३१-४०८००१०/११

फैक्स : ४०८००१२

Fatehchand Tarun Kumar Singhi

(Bidasar–Indore)

Tarun Enterprises

581/5, M.G. Road

306, Bansi Trade Centre

INDORE 452001

Phone : 0731-4080010/11

Fax : 4080012

महाश्रमण करुणा में हमारे से आगे निकल रहे हैं।
–आचार्य महाप्रज्ञ

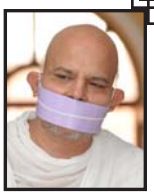

With Best Wishes

RAMESHKUMAR HAMERLAL JAIN

Total Metal Recyclers & Mfg. Metal Salts

Head Office : 111/119, Thakurdwar Road, **MUMBAI** 400002
Tel : 22013540, 22058973, 22069972 Fax : 22004579

Associates Concerns

RHJ EXTRUSION PRIVATE LIMITED
RHJ METALS PRIVATE LIMITED
RHJ TUBES PRIVATE LIMITED
RAJA ZINC PRIVATE LIMITED
DHAKAD METAL CORPORATION
SARA CHEMICALS

कैलाश जितने ऊंचे सोने और चांदी के असंख्य पर्वत भी मनुष्य की आकाश जितनी इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते।

–भगवान महावीर

मनुष्य की शक्ति और धन की इच्छा दूसरों के लिए वेदना का कारण बनती है।

–भगवान बुद्ध

हिंसा को तब तक नहीं मिटाया जा सकता जब तक परिग्रह के प्रति हमारी आसक्ति समाप्त नहीं होती।
परिग्रह का सीमाकरण होने पर हिंसा की समस्या स्वत: समाहित हो जाएगी।

–आचार्य तुलसी

हिंसा का मूल स्रोत है पदार्थ के प्रति मूर्च्छा।
पदार्थ की आसक्ति जितनी गहरी होगी हिंसा उतनी ही सघन होती चली जायेगी।

–आचार्य महाप्रज्ञ

भलाई का काम करो, भगवान की सच्ची भक्ति हो जाएगी। तुम्हें अच्छी शक्ति मिल जायेगी।

–आचार्य महाश्रमण

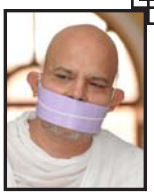

सादर नमन

एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन

४१/१ सी, झावूतल्ला रोड

कोलकाता ७०००१६

सम्मान पाने का प्रयास मत करो, सम्मान योग्य कार्य आज से ही प्रारंभ करो।

–आचार्य महाश्रमण

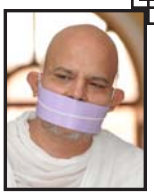

हेमराज सामसुखा

श्रीडूंगरगढ़–बैंगलोर

महाश्रमण को युवाचार्य बनाकर मैं आनंद और निर्भार की अनुभूति कर रहा हूं।

–आचार्य महाप्रज्ञ

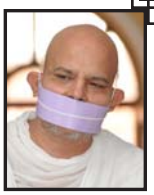

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

स्व. राजमलजी राठौड़ एवं स्व. मातुश्री लक्ष्मीबाई राठौड़ की पुण्य स्मृति में

प्रकाशबाई-बाबूलाल राठौड़ एवं भरतकुमार बाबूलाल राठौड़

चारभुजा–गोरेगांव (मुंबई)

भलाई का काम करो, भगवान की सच्ची भक्ति हो, तुम्हें अच्छी शक्ति मिलेगी।
–आचार्य महाश्रमण

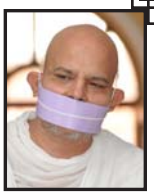

श्री मीठालाल एस. भोगर
शा. अम्बालाल मीठालाल

के. १२८२ ए, सूरत टेक्सटाइल्स मार्केट
रिंग रोड, सूरत ३९५८०२
मो. ९८२५१७१७८५

महाश्रमण ने मुझे निश्चिंत बना दिया।

-आचार्य महाप्रज्ञ

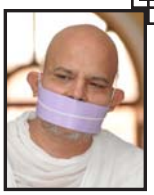

आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में रिछेड़ की पावन धरा पर
दिनांक ६ मई, २०११ को आयोजित अक्षय तृतीया महोत्सव में
उपस्थिति हेतु सादर आमंत्रण

बाबूलाल कच्छारा (९३२४० १११२१)

अध्यक्ष

आचार्यश्री महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति, रिछेड़

सोहनलाल सिंघी (९९३०० ४७५५९)

अध्यक्ष

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रिछेड़

स्पष्ट अवश्य कहो, किन्तु स्पष्ट सुनने का भी सामर्थ्य रखो।

–आचार्य महाश्रमण

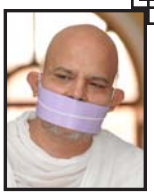

MAHALCHAND, DR. VIJAY, VIMAL GHORAWAT

Amit, Sumit, Shreyans Ghorawat

(Bidasar–Ladnun–Indore)

MN Glob Ex. Pvt. Ltd.
Sanchi Chemical Pvt. Ltd
Sanchi Organics Pvt. Ltd.
412-4, City Centre, 570, M.G. Road
Indore (M.P.)
Tel : 0731-2535587/2430097
Mob : 09827032110

MN Ghorawat Hospital &
Research Centre
Post : Ladnun 341306
Distt : Nagaur (Raj.)
Tel : 01581-223730/225533-32
Mob : 09414351081

विषय-प्रवेश

कोष्ठक विवरण

जय-तिथि-पत्रक का पहला कोष्ठक अंग्रेजी दिनांक का है और फिर वार का है। उसके बाद तिथि का कोष्ठक है। उसके आगे के दो कोष्ठक में क्रमशः इतने बजे व मिनट तक का संकेत है। छठा कोष्ठक नक्षत्र का है। सातवें व आठवें में नक्षत्र के कितने बजे व मिनट तक का सूचन है। नौवें व दसवें में क्रमशः सूर्योदय व सूर्यास्त कितने बजे होता है इसका निदर्शन है। सूर्योदय व सूर्यास्त लाडनूं को केन्द्र मानकर स्टेण्डर्ड टाइम में दिया गया है। ग्यारहवें कोष्ठक में प्रथम प्रहर कितने बजे आती है तथा बारहवें कोष्ठक में दिन का एक प्रहर कितने घंटे व मिनट का होता है, इसका दिग्दर्शन है। तेरहवें कोष्ठक में चन्द्रमा तथा चौदहवें कोष्ठक में विशेष विवरण के अंतर्गत योग तथा भद्राकाल है। ये भी बजे व मिनट के क्रम से हैं।

तिथि-पत्रक में बजे-मिनट रेलवे समय-सारिणी पद्धति से दिये गये हैं। मध्य रात्रि में १२ बजे से रेलवे समय सारिणी के अनुसार २४ बजे होता है, के बाद ०० समय से शुरू कर २४ बजे तक २४ घंटे मानते हुए चलता है। जैसे–चैत्र शुक्ला प्रतिपदा २२/२४ बजे है। इसका तात्पर्य है–यह तिथि उस दिन २२ बजकर २४ मिनट तक है अर्थात् रात्रि में १० बजकर २४ मिनट तक है। ज्येष्ठ कृष्णा दशमी १८/०३ बजे है। इसका अर्थ है यह तिथि उस दिन सायं ६ बजकर ०३ मिनट तक रहेगी। इसी तरह चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र १२/५६ बजे है। अर्थात् उस दिन दोपहर १२ बजकर ५६ मिनट तक है।

तिथि व नक्षत्र के बजे-मिनट बराबर में हैं। वे बजे, मिनट से स्पष्ट हैं। चंद्रमा के आगे संख्या ऊपर-नीचे हैं। चंद्रमा के ऊपर वाली संख्या बजे व नीचे वाली मिनट है। जैसे–चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को चंद्रमा मेष राशि में $\frac{१७}{१६}$ अर्थात् सायं ५ बजकर १६ मिनट पर चंद्रमा मेष राशि में प्रवेश करेगा। चंद्रमा के लिए इतना विशेष है कि उसका प्रवेश काल दिया है। विशेष विवरण स्पष्ट है। इसमें योग व अन्य के आगे संख्या बराबर में है।

तिथि, नक्षत्र आदि के साथ जहां शून्य (०) अंकित है, वह उस दिन 'पूरे दिन और पूरी रात' है अर्थात् वह तिथि या नक्षत्र उस दिन सूर्योदय से पूर्व शुरू हो गया और दूसरे दिन सूर्योदय होने के बाद तक रहा। वह समय अगले दिन की पंक्ति में है। जैसे–वैशाख कृष्णा सप्तमी को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के आगे (०) अंकित है जिससे यह नक्षत्र पूरे दिन-रात है। वैशाख कृष्णा त्रयोदशी (प्रथम) के आगे (०) अंकित है अर्थात् यह तिथि पूरे दिन-रात है।

सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय होने के ठीक पहले तक का समय ''रात्रि समय'' और उसके बाद ''दिवा समय'' होता है।

विशेष विवरण के कोष्ठक में प्रदत्त योगों के सांकेतिक अक्षरों में पूर्ण नाम इस प्रकार हैं :–

- र.–रवि योग (शुभ व कुयोगनाशक)
- अ.–अमृत सिद्धि योग (शुभ)
- राज.–राजयोग (शुभ)
- कु.–कुमार योग (शुभ)
- सि.–सिद्धि योग (शुभ)
- मृ.–मृत्यु योग (अशुभ)

- व्या.–व्याघात योग (अशुभ)
- वै.–वैधृति (अशुभ)
- व्य.–व्यतिपात योग (अशुभ)
- ज्वा.–ज्वालामुखी योग(अशुभ)
- पं.–पंचक (अशुभ) घास, लकड़ी एकत्र करने, घर की छत बनाने, दक्षिण यात्रा करने में वर्जित।
- भ.–भद्राकाल (शुभ-अशुभ दोनों)
- यम.–यमघंट योग (अशुभ)

नोट : शास्त्रीय मान्यता है कि मध्याह्न के पश्चात् अशुभ योगों का दोष नहीं रहता।

भद्रा-काल

श्रेष्ठ कार्यों में भद्रा-काल होना वर्जित है, किन्तु शास्त्रकारों ने भद्रा को शुभ भी माना है, जो इस प्रकार है–मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चंद्रमा में भद्रा का वास स्वर्ग में रहता है। यह भद्राकाल शुभ और ग्राह्य है।

कन्या, तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में भद्रा का वास नागलोक (पाताल) में रहता है। यह भद्राकाल भी लक्ष्मीदायक-धनदायक होने से शुभ है।

कुंभ, मीन, कर्क और सिंह के चंद्रमा में भद्रा का वास मृत्युलोक में होता है। यह अशुभ है, इसलिए शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जनीय है।

भद्राकाल समय-विशेष के साथ शुभ भी बताया है।

शुक्ल पक्ष की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और कृष्ण पक्ष की भद्रा सर्वसंज्ञक है। मतान्तर से रात्रि की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और दिन की भद्रा सर्वसंज्ञक है। सर्वसंज्ञक भद्रा के मुख की पांच घटी (२ घंटा) और वृश्चिक संज्ञक भद्रा की पुच्छ की तीन घटी (१ घंटा १२ मि.) शुभ कार्य में त्याज्य है।

तिथि-पत्रक के विवरण पृष्ठों के बाद कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बैंगलोर व जोधपुर–इन छह शहरों के महीने की पहली व पन्द्रहवीं तारीख के सूर्योदय व सूर्यास्त का समय दिया गया है।

समय-सारिणी के बाद नक्षत्र के नाम का अक्षर और राशि की तालिका है। फिर राशि स्वामी एवं गुरु दर्शन के नक्षत्र हैं। फिर घातचक्र है। इसके बाद यात्रा में चंद्र विचार, योगिनी विचार चक्र, दिशाशूल विचार चक्र तथा काल-राहु विचार चक्र है। इनसे अगले पृष्ठ पर सुयोग-कुयोग चक्र है। अंतिम पृष्ठ पर पोरसी प्रमाण, राहुकाल, दिन एवं रात्रि के चौघड़िये हैं।

चौघड़िया-अवलोकन

दिन का चौघड़िया सूर्योदय से प्रारंभ होता है तथा रात्रि का चौघड़िया सूर्यास्त से प्रारंभ होता है। एक दिन में आठ चौघड़िये व रात्रि में आठ चौघड़िये होते हैं।

चौघड़िया का काल दिन-रात छोटे-बड़े होने के अनुसार न्यूनाधिक होता रहता है। प्रत्येक दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने पर जो एक भाग प्राप्त होगा वह उस दिन में एक चौघड़िया का मान होगा, अर्थात् दिन की समयावधि का आठवां हिस्सा एक चौघड़िया होता है। इसी प्रकार सूर्यास्त से अगले सूर्योदय तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने से प्राप्त होने वाला एक हिस्सा रात्रि के चौघड़िये का मान होता है। अर्थात् रात्रि की समयावधि का आठवां हिस्सा रात्रि का एक चौघड़िया होता है।

चौघड़िये में उद्वेग, काल और रोग–ये तीन अशुभ हैं। लाभ, अमृत और शुभ–ये तीन चौघड़िये श्रेष्ठ होते हैं। शुक्र के अर्थात् चल (चंचल) वेला के चौघड़िये

को भी अच्छा मानते हैं। श्रेष्ठ चौघड़िये में सभी कार्य करने प्रशस्त हैं। अमृत का चौघड़िया सभी शुभ कार्यों में अत्युत्तम है।

इस तिथि-पत्रक में लाडनूं को केन्द्र मानकर सूर्योदय एवं सूर्यास्त दिया गया है। उससे पूर्व दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट पहले सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। उससे पश्चिम दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट बाद में सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। लाडनूं अक्षांश २७°-४०°, उत्तर पर है। रेखांश ७४°-२४° पूर्व है। अयनांश २३° १७'-१८' रेखांतर ३२ मिनट २० सैकिण्ड है। बेलान्तर+२ मिनट ३२ सैकिण्ड है। पलभा ६-१० है।

धार्मिक उपासना में पर्व तिथियों का अपना महत्त्व होता है। पक्खी आदि का प्रतिक्रमण तिथि के आधार पर करना पड़ता है। पहले इसे 'पक्खी' के नाम से संत तैयार करते थे। उसे हर सिंघाड़े (ग्रुप) को एक-एक दे दिया जाता था, बाद में 'लघु-पंचांग' के नाम से श्री हनूतमलजी सुराणा (चूरू) छपाने लग गये। परमाराध्य गुरुदेव व आचार्यवर की दृष्टि से पिछले कई वर्षों से इसका संपादन संतों द्वारा होने लगा। 'लघु पंचांग' के बाद 'जय पंचांग' के रूप में सामने आया। सन् १९८४ से इसका संपादन मेरे द्वारा होने लगा। वर्तमान में यह **'जय-तिथि-पत्रक'** के नाम से प्रकाशित हो रहा है।

१८ नवंबर २०१० **मुनि सुमेर (लाडनूं)**
अमृत कुंज, संगरूर (पंजाब)

विशेष अवगति

वर्ष के दिन–इस वर्ष मास १२, पक्ष २४, तिथि क्षय १५, तिथि वृद्धि ०९, कुल दिन ३५४

गाज-बीज की अस्वाध्याय नहीं–आषाढ़ कृष्णा ७, बुधवार, दिनांक २२ जून २०११ से कार्तिक कृष्णा १२, सोमवार, दिनांक २४ अक्टूबर २०११ तक

चंद्रग्रहण– (i) ज्येष्ठ शुक्ला १५, बुधवार, दिनांक १५ जून २०११
(ii) मार्गशीर्ष शुक्ला १५, शनिवार, दिनांक १० दिसम्बर २०११

सूर्यग्रहण–इस वर्ष भारत में कोई सूर्यग्रहण नहीं

मलमास– (i) वर्ष प्रारंभ से चैत्र शुक्ला ११, गुरुवार, दिनांक १४ अप्रैल २०११ तक रहेगा। यह पिछले फाल्गुन शुक्ला ९, सोमवार, दिनांक १४ मार्च २०११ से प्रारंभ हो चुका था।
(ii) पौष कृष्णा ६, शुक्रवार, दिनांक १६ दिसम्बर २०११ से प्रारंभ, माघ कृष्णा ५/६, शनिवार, दिनांक १४ जनवरी २०१२ को संपन्न।
(iii) चैत्र कृष्णा ७, बुधवार, दिनांक १४ मार्च, २०१२ से प्रारंभ, अगले वर्ष में चलेगा।

तारा– (१) गुरु अस्त–पिछले वर्ष चैत्र कृष्णा ८, शनिवार, दिनांक २६ मार्च, २०११ से प्रारंभ, वैशाख कृष्णा ७, रविवार, दिनांक २४ अप्रैल, २०११ को संपन्न।
(२) शुक्र अस्त–श्रावण कृष्णा ११, मंगलवार, दिनांक २६ जुलाई २०११ से प्रारंभ, भाद्रपद शुक्ला १४, रविवार, दिनांक ११ सितम्बर २०११ को संपन्न।

नोट–ग्रहण, मलमास तथा गुरु, शुक्र के अस्तकाल में विशिष्ट शुभ कार्य वर्जनीय हैं।

विशेष ज्ञातव्य

(क) विशेष मुहूर्त्त

(१) अभिजित मुहूर्त्त, (२) रवियोग, (३) अमृत का चौघड़िया

(४) दीपावली का प्रदोषकाल (सूर्यास्त से दो घड़ी-४८ मिनट तक)

(५) पुष्य नक्षत्र के साथ रविवार या गुरुवार सदा श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु-पुष्य विवाह में वर्जित है।

(ख) यात्रा के लिए आवश्यक

(१) यात्रा-कर्ता की जन्म-राशि से यात्रा दिन का चंद्रमा चौथे, आठवें में स्थित न हो। पंचांग में घातचक्र में दिये गये चंद्रमा को भी टालें। (जन्म-राशि ज्ञात न होने से प्रचलित नाम राशि)।

(२) यात्रा के समय सम्मुख चंद्रमा हो तो सब दोष नष्ट माने जाते हैं। पूर्व दिशा में जाने के लिए मेष, सिंह, धन का चंद्रमा, पश्चिम में मिथुन, तुला और कुंभ का, दक्षिण में वृष, कन्या, मकर का और उत्तर में कर्क, वृश्चिक और मीन का चंद्रमा सम्मुख रहता है। दाहिना चंद्रमा भी शुभ है।

(३) यात्रा-योग न मिलने पर अमृत का चौघड़िया अथवा अभिजित मुहूर्त्त सदैव ग्राह्य है। बुधवार को अभिजित शुभ नहीं।

(४) राहू काल-कुवेला का समय वर्जनीय है।

(५) मृत्यु योग आदि अशुभ योग वर्जनीय है।

(ग) यात्रा के लिए अन्य ज्ञातव्य

(१) सोमवार और शनिवार को पूर्व में, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में, मंगलवार और बुधवार को उत्तर में तथा गुरुवार को दक्षिण में यात्रा न करें, क्योंकि दिशाशूल रहता है।

(२) उषाकाल में पूर्व में, गोधूलिकाल में पश्चिम में, मध्याह्न में दक्षिण में तथा मध्य रात्रि में उत्तर में यात्रा न करें, क्योंकि समयशूल रहता है।

(३) ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्व को, पूर्वाभाद्रपद में दक्षिण को, रोहिणी में पश्चिम को तथा उत्तराफाल्गुनी में उत्तर को यात्रा न करें, क्योंकि नक्षत्र-शूल रहता है।

(४) धनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती को पंचक कहते हैं। इन दिनों में दक्षिण की ओर यात्रा वर्जनीय है।

(५) तिथियां ४,६,८,९,१२,१४,३० और शुक्ल पक्ष की एकम यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(६) भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(७) अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती यात्रा में विशेष शुभ नक्षत्र माने जाते हैं।

(८) उत्तर में २,१०; दक्षिण में ५,१३; पूर्व में १,९; पश्चिम में ६,१४ तिथियों में योगिनी रहती है। योगिनी के सामने या दाहिने होने पर यात्रा वर्जनीय है।

(९) पूर्व में शनिवार को, पश्चिम में मंगलवार को, उत्तर में रविवार को तथा दक्षिण में गुरुवार को यात्रा का निषेध है क्योंकि काल-राहू सम्मुख रहता है।

(१०) शनिवार और बुधवार को ईशान कोण (पूर्वोत्तर) में, मंगलवार को वायव्य (पश्चिमोत्तर) में, रविवार, शुक्रवार को नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) में तथा सोमवार, गुरुवार को आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में विदिशाशूल है अतः यात्रा में वर्जनीय है।

दिशा-शूल परिहार–रवि को तांबूल, सोम को चंदन, मंगल को मट्ठा, बुध को पुष्प, गुरु को दही, शुक्र को घृत व शनि को तिल खाकर या देकर यात्रा करने में दिक्शूल-दोष मिटता है।

शकुन–यात्रा के समय लोहा, तेल, घास, मट्ठा, पत्थर, लकड़ी, बिलाव मिले तो अशुभ व दही, चावल, चांदी का घड़ा, पुष्प, हंस तथा मुर्दा शुभ है।

सुयोग के सामने सभी कुयोगों का नाश

इक्कस्स भए पंचाणणस्स, भज्जंति गय सय सहस्सा।
तह रवि जोग पणट्ठा, गयणम्मि गहा न दीसंति॥ यति वल्लभ॥

एक शेर के सामने लाख हाथी भी भाग जाते हैं। एक सूर्य के आने पर आकाश में एक भी ग्रह नहीं दीखता। इसी तरह रवि योग होने पर अन्य अप्योग स्वतः अप्रभावी बन जाते हैं।

रवियोगे राजयोगे, कुमारयोगे असुद्ध दिहए वि।
जं सुह कज्जं कीरइ, तं सव्वं बहुफलं होइ॥यतिवल्लभ॥

अशुभ दिन में भी रवियोग, राजयोग व कुमारयोग होने पर जो भी शुभ कार्य किया जाये तो वह बहुत फलदायी होता है।

सिद्धियोगः कुयोगश्च, जायेतां युगपद्यदि।
कुयोगं तत्र निर्जित्य, सिद्धि योगो विजृम्भते॥ आरंभ सिद्धि॥

सिद्धियोग व कुयोग यदि एक साथ हो तो कुयोग का फल नष्ट हो जाता है।

(घ) यात्रा-निवृत्ति पर प्रवेश मुहूर्त्त

शुभ नक्षत्र–अनु., चि., मृ., तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, ह., ध.।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

आजकल नक्षत्र चंद्रमा के अनुकूल होने पर रवि को भी प्रवेश करते हैं।

शुभ-तिथि–२,३,५,७,१०,११,१३,१५।

नोट : एक ही दिन में यात्रा और प्रवेश हो तो मात्र प्रवेश देखा जाए।

(च) दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त्त

शुभ मास–वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

शुभ नक्षत्र–तीनों उत्तरा,अश्वि, रो., रे., अनु., पुष्य., स्वा., पुन, श्र. ध., श., मू।

शुभ वार–रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ तिथि–२,३,५,७,१०,११,१३ शुक्ल पक्ष में;२,३,५ कृष्ण पक्ष में।

तीर्थंकरों के दीक्षा-कल्याणक दिन, नक्षत्र भी लिए जा सकते हैं।

नोट : गुरु अस्त न हो, अधिक मास व तिथि न हो।

(छ) विद्यारंभ आदि

शुभ तिथि–२,३,५,६,१०,११,१२ कृष्ण पक्ष २,३,५।

शुभ वार–बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–मृ, आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, मृ, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, ध, श, तीनों पूर्वा।

नोट : सोमवार, मंगलवार, शनिवार को आरंभ किया हुआ कोई भी साहित्य सृजन, शोध-कार्य आदि सफलता का सूचक नहीं होता। जैन विद्या का सत्रारंभ रवि और शुक्र को श्रेष्ठ रहता है।

साहित्य-सृजन में आर्द्रा, पुन, पुष्य, रे, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, अनु नक्षत्र उत्तम माने गये हैं, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

(ज) जन्म के पाये

आर्द्रा नक्षत्र से १० नक्षत्र तक चांदी का, विशाखा नक्षत्र से ४ नक्षत्र तक लोहे का, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र से ६ नक्षत्र तक तांबे का तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र से ७ नक्षत्र तक सोने का पाया होता है।

प्रकारान्तर से जन्म-नक्षत्र के कालमान को समान चार भागों में बांट लिया जाता है। प्रथम भाग में जन्म होने से सोने का पाया, द्वितीय भाग में होने से चांदी का पाया, तृतीय भाग में होने से तांबे का पाया और चौथे भाग में होने से लोहे का पाया मानते हैं।

लग्न और चंद्रमा से भी पाया देखा जाता है। जन्म-कुंडली में लग्न से पहला, छठा, ग्यारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो सोने का पाया, लग्न से दूसरा, पांचवां तथा नौवां चंद्रमा पड़ा हो तो चांदी का पाया, लग्न से तीसरा, सातवां व दसवां चंद्रमा पड़ा हो तो तांबे का पाया मानते हैं। जन्म से चौथा, आठवां व बारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो लोहे का पाया मानते हैं। सोना एवं लोहे का पाया कष्टप्रद तथा चांदी व तांबे का पाया श्रेष्ठ माने जाते हैं।

अधिकांश ज्योतिषियों के मतानुसार लग्न और चंद्रमा से देखा गया पाया ही मान्य होता है। पूरे देश में प्रायः इसी का प्रचलन है।

(झ) वार संज्ञक नक्षत्र

आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा और मघा–ये वार संज्ञक नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में जन्म होने पर जातक का जन्म वारों में हुआ माना जाता है। इनमें उत्पन्न बच्चों का प्रायः वही नक्षत्र आने से नामकरण होता है। ज्येष्ठा की अंतिम चार घड़ी तथा मूल की पहली चार घड़ी अभुक्त मूल मानी जाती है जो कष्टदायक है। मूल के प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए, दूसरे में माता के लिए, तीसरे में आर्थिक पक्ष के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। मूल का चौथा चरण शुभ माना जाता है। इसके विपरीत आश्लेषा का प्रथम चरण शुभ माना जाता है। दूसरा धन के लिए, तीसरा माता के लिए तथा चौथा पिता के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। इसी प्रकार ज्येष्ठा का प्रथम बड़े भाई के लिए, दूसरा छोटे भाई के लिए, तीसरा माता के लिए और चौथा स्वयं बालक के लिए अनिष्टकारक माना जाता है।

(ट) ग्रहण

सब जगह एक साथ ग्रहण नहीं लगता, इस कारण उसका समय नहीं दिया जाता है। जो ग्रहण जहां नहीं दीखता, उस ग्रहण की अस्वाध्याय आदि रखने की जरूरत नहीं है।

संवत् २०६८ के विशेष पर्व-दिवस

क्र.सं.	पर्व दिवस	तिथि	दिनांक	वार
१.	भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी	चैत्र शुक्ला-९	१२ अप्रैल २०११	मंगलवार
२.	महावीर जयन्ती (महावीर जन्म कल्याणक दिवस)	चैत्र शुक्ला-१३	१६ अप्रैल २०११	शनिवार
३.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस	वैशाख कृष्णा-११	२८ अप्रैल २०११	गुरुवार
४.	अक्षय तृतीया	वैशाख शुक्ला-३	६ मई २०११	शुक्रवार
५.	आचार्यश्री महाश्रमण का जन्म दिवस	वैशाख शुक्ला-९	१२ मई २०११	गुरुवार
६.	आचार्यश्री महाश्रमण का पदाभिषेक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०/११	१३ मई २०११	शुक्रवार
७.	भगवान् महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०/११	१३ मई २०११	शुक्रवार
८.	आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा दिवस (युवा दिवस)	वैशाख शुक्ला-१४	१६ मई २०११	सोमवार
९.	आचार्यश्री तुलसी का १५वां महाप्रयाण दिवस	आषाढ़ कृष्णा-३	१८ जून २०११	शनिवार
१०.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९२वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)	आषाढ़ कृष्णा-१३	२९ जून २०११	बुधवार
११.	आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं बोधि दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१३	१३ जुलाई २०११	बुधवार
१२.	चातुर्मासिक पक्खी	आषाढ़ शुक्ला-१५	१५ जुलाई २०११	शुक्रवार
१३.	२५२वां तेरापंथ स्थापना दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१५	१५ जुलाई २०११	शुक्रवार
१४.	स्वतंत्रता दिवस	भाद्रपद कृष्णा-२	१५ अगस्त २०११	सोमवार
१५.	श्रीमज्जयाचार्य निर्वाण दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२	२६ अगस्त २०११	शुक्रवार
१६.	पर्युषण प्रारंभ दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२	२६ अगस्त २०११	शुक्रवार

१७.	पर्युषण पक्खी	भाद्रपद कृष्णा-१४	२८ अगस्त २०११	रविवार
१८.	संवत्सरी महापर्व	भाद्रपद शुक्ला-५	२ सितंबर २०११	शुक्रवार
१९.	कालूगणी स्वर्गवास दिवस	भाद्रपद शुक्ला-६	३ सितंबर २०११	शनिवार
२०.	विकास महोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-९	६ सितंबर २०११	मंगलवार
२१.	२०९वां भिक्षु चरमोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-१३	१० सितंबर २०११	शनिवार
२२.	दीपावली	कार्तिक कृष्णा-३०	२६ अक्टूबर २०११	बुधवार
२३.	भगवान् महावीर निर्वाण कल्याणक दिवस	कार्तिक कृष्णा-३०	२६ अक्टूबर २०११	बुधवार
२४.	आचार्यश्री तुलसी का ९८वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)	कार्तिक शुक्ला-२	२८ अक्टूबर २०११	शुक्रवार
२५.	चातुर्मासिक पक्खी	कार्तिक शुक्ला-१५	१० नवंबर २०११	गुरुवार
२६.	भगवान् महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस	मार्गशीर्ष कृष्णा-१०	२० नवंबर २०११	रविवार
२७.	भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस	पौष कृष्णा-१०	२० दिसंबर २०११	मंगलवार
२८.	गणतंत्र दिवस	माघ शुक्ला-३	२६ जनवरी २०१२	गुरुवार
२९.	१४८वां मर्यादा महोत्सव	माघ शुक्ला-७	३० जनवरी २०१२	सोमवार
३०.	होलिका	फाल्गुन शुक्ला-१४	७ मार्च २०१२	बुधवार
३१.	चातुर्मासिक पक्खी	फाल्गुन शुक्ला-१४	७ मार्च २०१२	बुधवार
३२.	भगवान् ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस (वर्षीतप प्रारंभ)	चैत्र कृष्णा-८	१५ मार्च २०१२	गुरुवार

नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान

दुनिया में शक्ति का महत्त्व होता है। शक्तिहीन व्यक्ति अपने आप में रिक्तता का अनुभव करता है। कभी-कभी शक्तिविहीन मनुष्य अपने आपको दयनीय और असहाय भी अनुभव करता है। सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है। अन्य शक्तियों का भी अपना-अपना महत्त्व होता है।

गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का एक नया उपक्रम प्रारंभ किया। आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशन में वह उसी रूप में विधिवत् चल रहा है। उसका उद्देश्य है–आत्मशुद्धि और ऊर्जा का विकास। उसकी कालावधि आश्विन शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की निर्धारित की गई है। चैत्र शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की कालावधि में भी इसकी आराधना की जा सकती है। संपूर्ण विधि एवं समय-सारिणी इस प्रकार निश्चित की गई है–

प्रातः ६.३० से १०.०० बजे

'चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' – का पांच बार पाठ

चंदेसु निम्मलयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु – का तेरह बार पाठ

आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु – का तेरह बार पाठ

सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु – का तेरह बार पाठ

आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिसंतु – का तेरह बार पाठ

सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु – का इक्कीस बार पाठ

'चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।' – का पांच बार पाठ

ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो॥१॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं॥२॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया॥३॥

वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोई उवहम्मई।
अहागड़ेसु रीयंति, पुप्फेसु भमरा जहा॥४॥

महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो॥५॥ – का सात बार पाठ

प्रातः १०.०० से १०.३० बजे–आध्यात्मिक प्रवचन

मध्याह्न २.३० से ३.१५ बजे–आगम पाठ का स्वाध्याय।

(दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि आदि के मूल पाठ का स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण एवं व्याख्या)

पश्चिम रात्रि–४.४५ से ५.३० बजे

उवसग्गहरं पासं (उपसर्गहर स्तोत्र) आदि पांच श्लोक एवं 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण' का नौ बार पाठ। फिर 'विघन हरण' का जप।

उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं॥१॥
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायपब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं॥४॥
इह संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासं जिणचंद॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास
विसहर वसह जिण फुल्लिंग ह्रीं श्रीं नमः॥

विघनहरण

विघनहरण मंगलकरण, स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिंत्या काम॥

जप और आगम-स्वाध्याय के साथ तप का योग भी आवश्यक माना गया है। तप में एकासन, आयंबिल, षड्विगय वर्जन, पंच विगय वर्जन और दस प्रत्याख्यान में से किसी एक तप की आराधना इस अवधि में की जाए। व्यक्तिगत इच्छा के अनुसार नौ दिनों तक एक ही तप अथवा वैकल्पिक तप की आराधना की जा सकती है।

निर्धारित कालावधि और करणीय क्रम को यथावत् रखते हुए स्थानीय सुविधानुसार समय में परिवर्तन भी किया जा सकता है। साधु-साध्वियों की भांति श्रावक-श्राविकाएं भी इसमें संभागी बन सकते हैं। संभागी श्रावक-श्राविकाओं के लिए निम्नांकित नियम भी अनुष्ठान काल में पालनीय हैं–

ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोजन-विरमण (चौविहार/तिविहार), जमीकंद का वर्जन।

अनुष्ठान का प्रारंभ प्रथम दिन प्रातः ९.३० बजे से यानी प्रातःकालीन सत्र में किया जाए एवं अनुष्ठान का समापन रात्रि के ५.३० बजे यानी रात्रिकालीन सत्र में किया जाए।

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
४	सो	१	२२	२४	रे	१७	१६	६.२३	६.४७	९.२९	३.०६	मेष $\frac{१७}{१६}$	पं. १७/१६ तक, कु. १७/१६ से २२/२४ तक, वै. १०/२६ से
५	मं	२	२४	३५	अ	२०	००	६.२२	६.४७	९.२८	३.०६	मेष	अ. २०/०० तक (प्रवेशे वर्ज्य), राज. २०/०० से, वै. ११/१० तक
६	बु	३	०२	३२	भ	२२	३१	६.२१	६.४७	९.२७	३.०६	वृष $\frac{०५}{०७}$	राज. २२/३१ तक, र. २२/३१ से, सि. २२/३१ से
७	गु	४	०४	०९	कृ	२४	४४	६.१९	६.४८	९.२६	३.०७	वृष	यम. २४/४४ तक, भ. १५/२३ से ०४/०९ तक, र. २४/४४ तक
८	शु	५	०५	१९	रो	०२	३२	६.१८	६.४८	९.२५	३.०७	वृष	कु. और यम ०२/३२ तक, र. ०२/३२ से
९	श	६	०५	५६	मृ	०३	४९	६.१७	६.४८	९.२५	३.०८	मि. $\frac{१५}{१५}$	र. ०३/४९ तक
१०	र	७	०५	५३	आ	०४	२९	६.१६	६.४९	९.२४	३.०८	मिथुन	भ. ०५/५३ से
११	सो	८	०५	०८	पुन	०४	२७	६.१५	६.५०	९.२४	३.०९	कर्क $\frac{२२}{३१}$	भ. १७/३६ तक, र. ०४/२७ से
१२	मं	९	०३	३९	पु	०३	४२	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	कर्क	र. अहोरात्र, ज्वा. ०३/४२ से, श्री रामनवमी, श्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस
१३	बु	१०	०१	२८	आ	०२	१५	६.१३	६.५१	९.२३	३.०९	सिंह $\frac{०२}{१५}$	ज्वा. ०१/२८ तक, र. ०२/१५ तक, कु. ०२/१५ से
१४	गु	११	२२	४१	म	२४	१३	६.१२	६.५१	९.२२	३.१०	सिंह	भ. १२/०९ से २२/४१ तक, सूर्य अश्विनी और मेष में १३/०१ से, र. १३/०१ से २४/१३ तक, मलमास समाप्त
१५	शु	१२	१९	२५	पू.फा.	२१	४१	६.११	६.५२	९.२१	३.१०	क. $\frac{०३}{००}$	राज. १९/२५ तक, सि. २१/४१ तक
१६	श	१३	१५	४८	उ.फा.	१८	५१	६.१०	६.५२	९.२०	३.१०	कन्या	र. १८/५१ से, मृ. और यम. १८/५१ से, व्या. १५/३६ से, महावीर जयंती
१७	र	१४	१२	०१	ह	१५	५२	६.०९	६.५२	९.२०	३.११	तुला $\frac{०२}{२३}$	अ. १५/५२ तक, भ. १२/०१ से २२/०८ तक, र. १५/५२ तक, राज. १५/५२ से, व्या. ११/२१ तक
१८	सो	$\frac{१५}{१}$	$\frac{०८}{०४}$	$\frac{१५}{४१}$	चि	१२	५६	६.०८	६.५३	९.१९	३.११	तुला	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१९	मं	२	०१	३१	स्वा	१०	१५	६.०७	६.५४	९.१९	३.११	वृ. $\frac{०२}{३०}$	व्य. २३/१७ से
२०	बु	३	२२	५२	वि अ	०७ ०६	५९ १८	६.०६	६.५४	९.१८	३.१२	वृश्चिक	राज. ०७/५९ से २२/५२ तक, अ. ०७/५९ से ०६/१८ तक, भ. १२/०७ से २२/५२ तक
२१	गु	४	२०	५४	ज्ये	०५	२०	६.०५	६.५५	९.१७	३.१२	धन $\frac{०५}{२०}$	
२२	शु	५	१९	४३	मू	०५	१०	६.०४	६.५६	९.१७	३.१३	धन	कु. ०५/१० तक, र. ०५/१० से
२३	श	६	१९	२१	पू.षा.	०५	४९	६.०३	६.५६	९.१६	३.१३	धन	भ. १९/२१ से, र. ०५/४९ तक
२४	र	७	१९	४८	उ.षा.	०	०	६.०२	६.५७	९.१६	३.१४	म. $\frac{१२}{०८}$	भ. ०७/२९ तक
२५	सो	८	२०	५९	उ.षा.	०७	१५	६.०१	६.५८	९.१५	३.१४	मकर	सि. और मृ. ०७/१५ तक
२६	मं	९	२२	४५	श्र	०९	१८	६.००	६.५८	९.१५	३.१४	कुंभ $\frac{२२}{३२}$	पं. २२/३२ से
२७	बु	१०	२४	५६	ध	११	५२	५.५९	६.५९	९.१४	३.१५	कुंभ	पं., भ. ११/४८ से २४/५६ तक, सूर्य भरणी में २८/५३ से
२८	गु	११	०३	२१	श	१४	४३	५.५८	७.००	९.१४	३.१५	कुंभ	पं., आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस
२९	शु	१२	०५	५०	पू.भा.	१७	४३	५.५७	७.००	९.१३	३.१६	मीन $\frac{१०}{२८}$	पं., राज. १७/४३ से ०५/५० तक, वै. १४/५६ से
३०	श	१३	०	०	उ.भा.	२०	४१	५.५७	७.०१	९.१३	३.१६	मीन	पं., वै, १५/५२ तक
१	र	१३	०८	१३	रे	२३	३१	५.५६	७.०१	९.१२	३.१६	मेष $\frac{२३}{३१}$	भ. ०८/१३ से २१/२१ तक, पं. २३/३१ तक
२	सो	१४	१०	२५	अ	०२	०८	५.५५	७.०२	९.१२	३.१६	मेष	
३	मं	३०	१२	२२	भ	०४	२८	५.५४	७.०२	९.११	३.१७	मेष	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
४	बु	१	१३	५६	कृ	०	०	५.५३	७.०३	६.१०	३.१७	वृष. ११/००	सि. अहोरात्र
५	गु	२	१५	१६	कृ	०६	२८	५.५२	७.०३	६.१०	३.१८	वृष.	यम. ०६/२८ तक
६	शु	३	१६	०८	रो	०८	०६	५.५१	७.०४	६.०६	३.१८	मि. २०/४६	यम. ०८/०६ तक, र. ०८/०६ से, राज. ०८/०६ से १६/०८ तक, भ. ०४/२५ से, अक्षय तृतीया
७	श	४	१६	३४	मृ	०६	१६	५.५१	७.०४	६.०६	३.१८	मिथुन	र. ०६/१६ तक, भ. १६/३४ तक
८	र	५	१६	३१	आ	१०	०५	५.५०	७.०५	६.०६	३.१६	कर्क ०४/२०	र. १०/०५ से
९	सो	६	१५	५७	पुन	१०	२०	५.५०	७.०६	६.०६	३.१६	कर्क	कु. १०/२० तक, र. १०/२० तक
१०	मं	७	१४	४६	पु	१०	०४	५.४६	७.०७	६.०६	३.१६	कर्क	राज. १०/०४ तक, भ. १४/४६ से ०२/०३ तक
११	बु	८	१३	०६	आ	०६	१५	५.४६	७.०८	६.०६	३.२०	सिंह ०६/१५	र. ०६/१५ से २२/५७ तक, सूर्य कृतिका में २२/५७ से
१२	गु	९	१०	५६	म	०७	५६	५.४८	७.०८	६.०६	३.२०	सिंह	र. ०७/५६ से, व्या. ०७/२३ से ०४/१३ तक, आचार्यश्री महाश्रमण जन्म दिवस (अमृत महोत्सव : प्रथम चरण)
१३	शु	१०/११	०८/०५	२२/२५	पू.फा./उ.फा.	०६/०४	०६/०१	५.४७	७.०६	६.०८	३.२०	क. ११/३८	सि. ०६/०६ तक, भ. १८/१६ से ०५/२५ तक, र. ०४/०१ तक, कु. ०४/०१ से ०५/२५ तक, भगवान महावीर केवलज्ञान दिवस, आचार्यश्री महाश्रमण पदाभिषेक दिवस
१४	श	१२	०२	१३	ह	०१	३८	५.४७	७.१०	६.०७	३.२१	कन्या	मृ. और यम. ०१/३८ तक
१५	र	१३	२२	५६	चि	२३	०६	५.४६	७.१०	६.०७	३.२१	तु. १२/२४	सूर्य वृषभ में ०६/५१ से, र. २३/०६ से, व्य. १७/१८ से
१६	सो	१४	१६	४२	स्वा	२०	४४	५.४६	७.१०	६.०७	३.२१	तुला	भ. १६/४२ से, र. २०/४४ तक, यम. २०/४४ से, व्य. १३/३२ तक, आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा दिवस (युवा दिवस)
१७	मं	१५	१६	४०	वि	१८	३२	५.४५	७.१०	६.०६	३.२१	वृ. १३/०४	भ. ०६/१० तक, कु. १६/४० से १८/३२ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१८	बु	१	१४	०१	अ	१६	४२	५.४४	७.११	९.०६	३.२२	वृश्चिक	अ. १६/४२ तक, राज. १४/०१ से १६/४२ तक
१९	गु	२	११	५२	ज्ये	१५	२५	५.४४	७.१२	९.०६	३.२२	ध. $\frac{१५}{२५}$	भ. २३/०१ से
२०	शु	३	१०	२०	मू	१४	४५	५.४३	७.१२	९.०५	३.२२	धन	भ. १०/२० तक
२१	श	४	०९	३१	पू.षा.	१४	४९	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	म. $\frac{२०}{५७}$	
२२	र	५	०९	२७	उ.षा.	१५	३७	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	मकर	र. १५/३७ से
२३	सो	६	१०	०९	श्र	१७	०८	५.४२	७.१४	९.०५	३.२३	मकर	कु. १०/०९ तक, सि. १७/०८ तक, भ. १०/०९ से २२/४५ तक, र. १७/०८ तक
२४	मं	७	११	३१	ध	१९	१७	५.४२	७.१५	९.०५	३.२३	कुंभ $\frac{०६}{०८}$	राज. ११/३१ तक, पं. ०६/०८ से, मृ. १९/१७ से, वै. २१/०४ से
२५	बु	८	१३	२४	श	२१	५३	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	कुंभ	पं., सूर्य रोहिणी में १९/१५ से, वै. २१/४२ तक
२६	गु	९	१५	३९	पू.भा.	२४	४६	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	मीन $\frac{१८}{०२}$	पं., भ. ०४/५० से
२७	शु	१०	१८	०३	उ.भा.	०३	४४	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	मीन	पं., भ. १८/०३ तक, अ. ०३/४४ से
२८	श	११	२०	२३	रे	०	०	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	मीन	पं.
२९	र	१२	२२	३१	रे	०६	३५	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	मेष $\frac{०६}{३५}$	पं. ०६/३५ तक
३०	सो	१३	२४	१८	अ	०९	१०	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	मेष	भ. २४/१८ से
३१	मं	१४	०१	३९	भ	११	२३	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	वृष. $\frac{१७}{२३}$	भ. १३/०२ तक
१	बु	३०	०२	३४	कृ	१३	१०	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	वृष.	सि. १३/१० तक, कु. ०२/३४ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२	गु	१	०२	५६	रो	१४	३१	५.४०	७.१८	६.०४	३.२४	मि. ०३/००	मृ. १४/३१ से
३	शु	२	०२	५७	मृ	१५	२३	५.३६	७.१८	६.०४	३.२५	मिथुन	राज. १५/२३ तक
४	श	३	०२	२८	आ	१५	५०	५.३६	७.१६	६.०४	३.२५	मिथुन	र. १५/५० से
५	र	४	०१	३५	पुन	१५	५१	५.३६	७.१६	६.०४	३.२५	कर्क ०६/५२	भ. १४/०४ से ०१/३५ तक, र. १५/५१ तक
६	सो	५	२४	१६	पु	१५	२८	५.३६	७.२०	६.०४	३.२५	कर्क	र. १५/२८ से, व्या. १८/४४ से
७	मं	६	२२	४१	आ	१४	४४	५.३६	७.२१	६.०४	३.२५	सिंह १४/४४	र. १४/४४ तक, कु. १४/४४ से २२/४१ तक, व्या. १६/२६ तक
८	बु	७	२०	४५	म	१३	४१	५.३६	७.२१	६.०४	३.२५	सिंह	राज. १३/४१ से २०/४५ तक, सूर्य मार्गशीर्ष में १७/०२ से, भ. २०/४५ से
९	गु	८	१८	३४	पू.फा.	१२	२०	५.३६	७.२२	६.०५	३.२६	क. १७/५८	भ. ०७/४१ तक
१०	शु	९	१६	०९	उ.फा.	१०	४६	५.३६	७.२२	६.०५	३.२६	कन्या	र. १०/४६ से, कु. १६/०९ से, व्य. ०८/१० से ०५/०३ तक
११	श	१०	१३	३५	ह	०६	०२	५.३६	७.२३	६.०५	३.२६	तुला २०/०८	र. अहोरात्र, मृ. और यम. ०६/०२ तक, भ. २४/१६ से
१२	र	११	१०	५७	चि / स्वा	०७ / ०५	१३ / २४	५.३६	७.२३	६.०५	३.२६	तुला	र. ०७/१३ तक, भ. १०/५७ तक
१३	सो	१२ / १३	०८ / ०५	२१ / ५३	वि	०३	४३	५.३६	७.२४	६.०५	३.२६	वृ. २२/०७	यम. ०३/४३ तक, र. ०३/४३ से
१४	मं	१४	०३	३६	अ	०२	१५	५.३६	७.२४	६.०५	३.२६	वृश्चिक	र. ०२/१५ तक, भ. ०३/३६ से
१५	बु	१५	०१	४५	ज्ये	०१	०७	५.३६	७.२५	६.०५	३.२६	ध. ०१/०७	भ. १४/३६ तक, सूर्य मिथुन में १६/२७ से, यम. ०१/०७ से, ज्वा. ०१/४५ से, कु. ०१/४५ से, चंद्रग्रहण पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१६	गु	१	२४	१६	मू	२४	२६	५.३६	७.२५	६.०५	३.२६	धन	ज्वा. २४/१६ तक
१७	शु	२	२३	२६	पू.षा.	२४	१८	५.३६	७.२५	६.०५	३.२६	धन	राज. २४/१८ तक
१८	श	३	२३	०६	उ.षा.	२४	४६	५.३६	७.२५	६.०५	३.२६	म. ०६/२१	भ. ११/१३ से २३/०६ तक, आचार्यश्री तुलसी का १५वां महाप्रयाण दिवस
१९	र	४	२३	३२	श्र	०१	५३	५.३६	७.२५	६.०५	३.२६	मकर	वै. ०६/४६ से
२०	सो	५	२४	३४	ध	०३	३७	५.३६	७.२६	६.०६	३.२७	कुंभ १४/४१	पं. १४/४१ से, र. ०३/३७ से, वै. ०६/१६ तक
२१	मं	६	०२	१०	श	०५	५४	५.३६	७.२६	६.०६	३.२७	कुंभ	पं., मृ. ०५/५४ तक, भ. ०२/१० से, र. ०५/५४ तक
२२	बु	७	०४	१२	पू.भा.	०	०	५.३६	७.२६	६.०६	३.२७	मीन ०१/५४	पं., भ. १५/०८ तक, सूर्य आर्द्रा में १६/०७ से, र. १६/०७ से, गाजबीज की अस्वाध्याय नहीं
२३	गु	८	०	०	पू.भा.	०८	३६	५.४०	७.२७	६.०७	३.२७	मीन	पं., र. ०८/३६ तक
२४	शु	८	०६	३०	उ.भा.	११	२९	५.४१	७.२७	६.०८	३.२७	मीन	पं., अ. ११/२९ से
२५	श	९	०८	५०	रे	१४	२३	५.४१	७.२७	६.०८	३.२७	मेष १४/२३	पं. १४/२३ तक, भ. २१/५७ से
२६	र	१०	१०	५६	अ	१७	०५	५.४२	७.२७	६.०८	३.२६	मेष	भ. १०/५६ तक
२७	सो	११	१२	४७	भ	१९	२३	५.४२	७.२७	६.०८	३.२६	वृष. ०१/५२	
२८	मं	१२	१४	०५	कृ	२१	०९	५.४३	७.२७	६.०९	३.२६	वृष.	
२९	बु	१३	१४	४७	रो	२२	२२	५.४३	७.२७	६.०९	३.२६	वृष.	भ. १४/४७ से ०२/५५ तक, आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९२वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)
३०	गु	१४	१४	५३	मृ	२२	५८	५.४४	७.२७	६.१०	३.२६	मि. १०/४४	मृ. २२/५८ तक पक्खी
१	शु	३०	१४	२५	आ	२३	०२	५.४४	७.२७	६.१०	३.२६	मिथुन	कु. २३/०२ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२	श	१	१३	२४	पुन	२२	३६	५.४५	७.२७	६.११	३.२५	कर्क $\frac{१६}{२५}$	व्या. ०६/२६ से ०४/२३ तक
३	र	२	११	५६	पु	२१	४५	५.४५	७.२७	६.११	३.२५	कर्क	राज. २१/४५ तक, र. २१/४५ से
४	सो	३	१०	०८	आ	२०	३६	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	सिंह $\frac{२०}{३६}$	र. २०/३६ तक, भ. २१/०८ से
५	मं	४ / ५	०८ / ०५	०५ / ५०	म	१९	१४	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	सिंह	भ. ०८/०५ तक, कु. ०८/०५ से १९/१४ तक, र. १९/१४ से, व्य. २०/३२ से
६	बु	६	०३	३१	पू.फा.	१७	४४	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	क. $\frac{२३}{२९}$	सूर्य पुनर्वसु में १५/३७ से, र. १५/३७ तक, पुनः १७/४४ से, व्य. १७/३६ तक
७	गु	७	०१	१०	उ.फा.	१६	११	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	कन्या	र. १६/११ तक, भ. ०१/१० से
८	शु	८	२२	५२	ह	१४	४०	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	तु. $\frac{०१}{५५}$	भ. १२/०१ तक
९	श	९	२०	४०	चि	१३	१३	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	तुला	र. १३/१३ से, सि. १३/१३ से
१०	र	१०	१८	३६	स्वा	११	५३	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	वृ. $\frac{०५}{००}$	र. अहोरात्र, भ. ०५/३९ से
११	सो	११	१६	४४	वि	१०	४५	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	वृश्चिक	यम. और कु. १०/४५ तक, र. १०/४५ तक, भ. १६/४४ तक
१२	मं	१२	१५	०७	अ	०९	५०	५.४७	७.२६	६.१२	३.२५	वृश्चिक	राज. ०९/५० तक
१३	बु	१३	१३	४६	ज्ये	०९	११	५.४७	७.२६	६.१२	३.२४	धन $\frac{०९}{१९}$	र. ०९/११ से, यम. ०९/११ से, आचार्यश्री भिक्षु जन्म दिवस एवं बोधि दिवस
१४	गु	१४	१२	४७	मू	०८	५२	५.४७	७.२५	६.१२	३.२४	धन	र. ०८/५२ तक, भ. १२/४७ से २४/२६ तक, वै. १८/५४ से
१५	शु	१५	१२	११	पू.षा.	०८	५७	५.४८	७.२५	६.१२	३.२४	म. $\frac{१५}{०२}$	राज. ०८/५७ तक, वै. १७/३० तक, २५२वां तेरापंथ स्थापना दिवस, चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१६	श	१	१२	०५	उ.षा.	०९	२९	५.४९	७.२५	९.१३	३.२४	मकर	सूर्य कर्क में ०३/२२ से
१७	र	२	१२	२८	श्र	१०	३१	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	कुंभ $\frac{२३}{१४}$	राज. १०/३१ से, पं. २३/१४ से, भ. २४/५२ से
१८	सो	३	१३	२४	ध	१२	०५	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	कुंभ	पं., भ. १३/२४ तक
१९	मं	४	१४	५२	श	१४	०९	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	कुंभ	पं., मृ. १४/०९ तक, कु. १४/५२ से
२०	बु	५	१६	४६	पू.भा.	१६	३९	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	मीन $\frac{०९}{५९}$	पं. सूर्य पुष्य में १५/१५ से, कु. १६/३९ तक
२१	गु	६	१९	००	उ.भा.	१९	२८	५.५२	७.२४	९.१५	३.२३	मीन	पं., भ. १९/०० से, र. १९/२८ से
२२	शु	७	२१	२३	रे	२२	२५	५.५२	७.२३	९.१५	३.२३	मेष $\frac{२२}{२५}$	अ. २२/२५ तक, भ. ०८/११ तक, पं. और र. २२/२५ तक
२३	श	८	२३	४०	अ	०१	१७	५.५३	७.२३	९.१५	३.२३	मेष	
२४	र	९	०१	३९	भ	०३	५०	५.५३	७.२२	९.१५	३.२२	मेष	
२५	सो	१०	०३	०८	कृ	०५	५३	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	वृष. $\frac{१०}{२३}$	भ. १४/२८ से ०३/०८ तक, कु. ०५/५३ से
२६	मं	११	०३	५७	रो	०	०	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	वृष.	कु. ०३/५७ तक
२७	बु	१२	०४	०३	रो	०७	१७	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	मि. $\frac{१९}{४२}$	राज. ०७/१७ से ०४/०३ तक, व्या. १९/२३ से
२८	गु	१३	०३	२४	मृ	०७	५७	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	मिथुन	मृ. ०७/५७ तक, भ. ०३/२४ से, व्या. १८/०५ तक
२९	शु	१४	०२	०४	आ	०७	५५	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	कर्क $\frac{०१}{२७}$	भ. १४/४९ तक
३०	श	३०	२४	११	पुन पु	०७ ०५	१३ ५९	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	कर्क	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३१	र	१	२१	४८	आ	०४	१८	५.५७	७.१८	६.१७	३.२०	सिंह $\frac{०५}{१८}$	यम. ०४/१८ से, व्य. ११/०१ से
१	सो	२	१६	०८	म	०२	२१	५.५७	७.१८	६.१७	३.२०	सिंह	र. ०२/२१ से, व्य. ०७/५३ तक
२	मं	३	१६	१६	पू.फा.	२४	१७	५.५८	७.१७	६.१८	३.२०	क. $\frac{०५}{४५}$	राज. १६/१६ तक, र. २४/१७ तक, भ. ०२/५० से
३	बु	४	१३	२३	उ.फा.	२२	१४	५.५६	७.१७	६.१८	३.१६	कन्या	भ. १३/२३ तक, सूर्य आश्लेषा में १४/०५ से, र. १४/०५ से २२/१४ तक, कु. २२/१४ से
४	गु	५	१०	३६	ह	२०	१६	५.५६	७.१६	६.१८	३.१६	कन्या	र. २०/१६ से
५	शु	६ / ७	०८ / ०५	०० / ४१	चि	१८	३८	६.००	७.१५	६.१६	३.१६	तुला $\frac{०७}{२६}$	राज. ०८/०० से १८/३८ तक, र. १८/३८ तक, भ. ०५/४१ से
६	श	८	०३	४३	स्वा	१७	१६	६.०१	७.१४	६.१६	३.१८	तुला	सि. १७/१६ तक, भ. १६/४० तक
७	र	६	०२	०७	वि	१६	१६	६.०१	७.१४	६.१६	३.१८	वृ. $\frac{१०}{३०}$	र. १६/१६ से, मृ. १६/१६ से
८	सो	१०	२४	५४	अ	१५	३८	६.०२	७.१३	६.२०	३.१८	वृश्चिक	र. अहोरात्र, वै. ०५/४३ से
६	मं	११	२४	०३	ज्ये	१५	२३	६.०२	७.१२	६.२०	३.१७	धन $\frac{१५}{२३}$	र. १५/२३ तक, भ. १२/२६ से २४/०३ तक, कु. १५/२३ से २४/०३ तक, वै. ०४/०३ तक
१०	बु	१२	२३	३५	मू	१५	३०	६.०३	७.११	६.२०	३.१७	धन	यम. १५/३० तक, राज. १५/३० से २३/३५ तक
११	गु	१३	२३	३०	पू.षा.	१६	००	६.०३	७.१०	६.२०	३.१७	म. $\frac{२२}{१९}$	र. १६/०० से
१२	शु	१४	२३	४७	उ.षा.	१६	५१	६.०४	७.०६	६.२०	३.१६	मकर	र. १६/५१ तक, भ. २३/४७ से
१३	श	१५	२४	२६	श्र	१८	०६	६.०४	७.०६	६.२०	३.१६	मकर	भ. १२/०५ तक, रक्षाबंधन पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१४	र	१	०१	३६	ध	१६	४६	६.०५	७.०७	६.२०	३.१६	कुंभ $\frac{०६}{२३}$	पं. ०६/५३ से
१५	सो	२	०३	०८	श	२१	५०	६.०५	७.०६	६.२०	३.१५	कुंभ	पं., स्वतंत्रता दिवस
१६	मं	३	०५	०३	पू.भा.	२४	१६	६.०६	७.०५	६.२१	३.१५	मीन $\frac{१७}{३७}$	पं., भ. १६/०३ से ०५/०३ तक, राज. २४/१६ से ०५/०३ तक, सि. २४/१६ से
१७	बु	४	०	०	उ.भा.	०३	०२	६.०६	७.०४	६.२१	३.१४	मीन	पं., सूर्य मघा और सिंह में १०/५० से
१८	गु	४	०७	१८	रे	०६	००	६.०७	७.०३	६.२१	३.१४	मेष $\frac{०६}{००}$	पं. ०६/०० तक
१९	शु	५	०९	४४	अ	०	०	६.०७	७.०२	६.२१	३.१४	मेष	कु. अहोरात्र
२०	श	६	१२	११	अ	०९	०१	६.०७	७.०१	६.२१	३.१३	मेष	र. ०९/०१ से, भ. १२/११ से ०१/२१ तक
२१	र	७	१४	२६	भ	११	५२	६.०८	७.००	६.२१	३.१३	वृष. $\frac{१८}{३२}$	राज. ११/५२ तक, र. ११/५२ तक, ज्वा. १४/२६ से, व्या. ०५/२३ से
२२	सो	८	१६	१६	कृ	१४	१९	६.०८	७.००	६.२१	३.१३	वृष.	ज्वा. १४/१९ तक पुनः १६/१६ से, व्या. ०५/३४ तक
२३	मं	९	१७	२८	रो	१६	११	६.०९	६.५९	६.२१	३.१३	मि. $\frac{०४}{२९}$	ज्वा. १६/११ तक, भ. ०५/४७ से
२४	बु	१०	१७	५४	मृ	१७	१९	६.०९	६.५८	६.२१	३.१२	मिथुन	भ. १७/५४ तक
२५	गु	११	१७	२९	आ	१७	३७	६.१०	६.५७	६.२२	३.११	मिथुन	सि. १७/३७ से, व्य. ०२/३५ से
२६	शु	१२	१६	१५	पुन	१७	०६	६.११	६.५६	६.२२	३.११	कर्क $\frac{११}{१७}$	व्य. २४/१६ तक, श्रीमज्जयाचार्य निर्वाण दिवस, पर्युषण प्रारंभ
२७	श	१३	१४	१५	पु	१५	५०	६.११	६.५५	६.२२	३.११	कर्क	भ. १४/१५ से ०१/०१ तक
२८	र	१४	११	३९	आ	१३	५८	६.१२	६.५४	६.२३	३.१०	सिंह $\frac{१३}{२८}$	यम. १३/५८ से पक्खी
२९	सो	३० / १	०८ / ०५	३५ / १३	म	११	३९	६.१३	६.५३	६.२३	३.१०	सिंह	कु. ०८/३५ से ११/३९ तक

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३०	मं	२	०१	४३	पू.फा. उ.फा.	०६ ०६	०३ २३	६.१३	६.५२	६.२३	३.१०	क. $\frac{१४}{२३}$	राज. ०६/०३तक, र. ०६/२३ से
३१	बु	३	२२	१८	ह	०३	४७	६.१४	६.५१	६.२३	३.०६	कन्या	सूर्य पूर्वाफाल्गुनी में ०७/४६ से, र. ०७/४६ तक पुनः ०३/४७ से
१	गु	४	१६	०४	चि	०१	२८	६.१४	६.५०	६.२३	३.०६	तुला $\frac{१४}{३५}$	भ. ०८/३६ से १६/०४ तक, र. ०१/२८ तक
२	शु	५	१६	१२	स्वा	२३	३१	६.१४	६.४६	६.२३	३.०६	तुला	र. २३/३१ से, कु. २३/३१ से, संवत्सरी महापर्व
३	श	६	१३	४८	वि	२२	०४	६.१५	६.४८	६.२३	३.०८	वृ. $\frac{१६}{२२}$	र. २२/०४ तक, वै. १६/३१ से, कालूगणी स्वर्गवास दिवस
४	र	७	११	५५	अ	२१	०६	६.१५	६.४७	६.२३	३.०८	वृश्चिक	राज. ११/५५ तक, मृ. २१/०६ तक, भ. ११/५५ से २३/१२ तक, वै. १३/५७ तक
५	सो	८	१०	३७	ज्ये	२०	४८	६.१५	६.४५	६.२३	३.०७	ध. $\frac{२०}{४८}$	र. २०/४८ से
६	मं	६	०६	५२	मू	२१	०१	६.१६	६.४४	६.२३	३.०७	धन	र. अहोरात्र, कु. ०६/५२ से २१/०१ तक, विकास महोत्सव
७	बु	१०	०६	३६	पू.षा.	२१	४३	६.१६	६.४३	६.२३	३.०७	म. $\frac{०३}{५८}$	र. २१/४३ तक, भ. २१/४४ से
८	गु	११	०६	५६	उ.षा.	२२	५२	६.१७	६.४२	६.२३	३.०६	मकर	भ. ०६/५६ तक
६	शु	१२	१०	३६	श्र	२४	२५	६.१७	६.४१	६.२३	३.०६	मकर	र. २४/२५ से, आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव : द्वितीय चरण
१०	श	१३	११	४५	ध	०२	१६	६.१८	६.४०	६.२३	३.०५	कुंभ $\frac{१३}{२०}$	पं. १३/२० से, र. ०२/१६ तक, २०६वां भिक्षु चरमोत्सव दिवस
११	र	१४	१३	१२	श	०४	३२	६.१८	६.३६	६.२३	३.०५	कुंभ	पं., भ. १३/१२ से ०२/०३ तक
१२	सो	१५	१४	५८	पू.भा.	०	०	६.१८	६.३८	६.२३	३.०५	मीन $\frac{२४}{२४}$	पं., कु. १४/५८ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१३	मं	१	१७	०२	पू.भा.	०७	०३	६.१८	६.३७	९.२३	३.०५	मीन	पं., कु. ०७/०३ तक, सि. ०७/०३ से, राज. १७/०२ से, सूर्य उत्तरा फाल्गुनी में ०१/४१ से
१४	बु	२	१९	२२	उ.भा.	०९	५०	६.२०	६.३६	९.२४	३.०४	मीन	पं., राज. ०९/५० तक
१५	गु	३	२१	५१	रे	१२	४८	६.२०	६.३५	९.२४	३.०४	मेष $\frac{१२}{४८}$	भ. ०८/३५ से २१/५१ तक, पं. १२/४८ तक
१६	शु	४	२४	२४	अ	१५	५२	६.२१	६.३४	९.२४	३.०३	मेष	ज्वा, २४/२४ से, व्या. ११/०९ से
१७	श	५	०२	५०	भ	१८	५३	६.२१	६.३३	९.२४	३.०३	वृष. $\frac{०१}{३६}$	सूर्य कन्या में ११/४९ से, ज्वा. १८/५३ तक, व्या. १२/०७ तक
१८	र	६	०४	५९	कृ	२१	४०	६.२१	६.३२	९.२४	३.०३	वृष.	र. २१/४० से, भ. ०४/५९ से
१९	सो	७	०	०	रो	२४	००	६.२१	६.३१	९.२४	३.०२	वृष.	भ. १७/५२ तक, र. २४/०० तक, अ. २४/०० से
२०	मं	७	०६	३६	मृ	०१	४२	६.२२	६.२९	९.२४	३.०२	मि. $\frac{१२}{५६}$	राज. ०६/३६ तक, यम. ०१/४२ से, व्य. १३/३६ से
२१	बु	८	०७	३१	आ	०२	३९	६.२२	६.२८	९.२४	३.०२	मि.	व्य. १३/०७ तक
२२	गु	९	०७	३८	पुन	०२	४५	६.२३	६.२८	९.२४	३.०१	कर्क $\frac{२०}{४८}$	सि. ०२/४५ तक, भ. १९/२२ से, गुरुपुष्यामृत योग ०२/४५ से (विवाहे वर्ज्य)
२३	शु	१० ११	०६ ०५	५२ १७	पु	०२	००	६.२३	६.२५	९.२४	३.००	कर्क	भ. ०६/१२ तक, मृ. ०२/०० से
२४	श	१२	०२	५३	आ	२४	२८	६.२४	६.२३	९.२४	२.५९	सिंह $\frac{२४}{२८}$	
२५	र	१३	२३	५३	म	२२	१८	६.२५	६.२२	९.२४	२.५९	सिंह	यम. २२/१८ तक, भ. २३/५३ से
२६	सो	१४	२०	२५	पू.फा.	१९	३९	६.२५	६.२१	९.२४	२.५९	क. $\frac{२४}{५५}$	भ. १०/११ तक
२७	मं	३०	१६	४०	उ.फा.	१६	४२	६.२६	६.२०	९.२४	२.५८	कन्या	कु. १६/४० से, सूर्य हस्त में १७/११ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२८	बु	१	१२	४६	ह	१३	३६	६.२६	६.१६	६.२४	२.५८	तुला $\frac{२४}{०६}$	कु. १२/४६ तक, राज. १३/३६ से
२९	गु	२ ३	०६ ०५	०४ ३४	चि	१०	४३	६.२६	६.१८	६.२४	२.५८	तुला	वै. ०८/१२ से ०४/०६ तक
३०	शु	४	०२	३२	स्वा वि	०८ ०५	०३ ५०	६.२७	६.१७	६.२४	२.५८	वृ. $\frac{२४}{२१}$	र. ०८/०३ से ०५/५२ तक, भ. १६/०० से ०२/३२ तक, कु. ०२/३२ से ०५/५० तक
१	श	५	२४	०३	अ	०४	१२	६.२७	६.१६	६.२४	२.५७	वृश्चिक	र. ०४/१२ से
२	र	६	२२	१३	ज्ये	०३	१५	६.२८	६.१५	६.२५	२.५७	धन $\frac{०३}{१५}$	र. ०३/१५ तक, सि. ०३/१५ से
३	सो	७	२१	०५	मू	०२	५६	६.२६	६.१३	६.२५	२.५६	धन	भ. २१/०५ से
४	मं	८	२०	४०	पू.षा.	०३	२४	६.२६	६.१२	६.२५	२.५६	धन	भ. ०८/४७ तक, र. ०३/२४ से
५	बु	९	२२	५५	उ.षा.	०४	२७	६.२९	६.११	६.२५	२.५५	म. $\frac{०९}{३७}$	र. अहोरात्र, कु. ०४/२७ से
६	गु	१०	२१	४६	श्र	०६	०३	६.३०	६.१०	६.२५	२.५५	मकर	र. ०६/०३ तक
७	शु	११	२३	०६	ध	०	०	६.३०	६.०९	६.२५	२.५५	कुंभ $\frac{१९}{०२}$	भ. १०/२३ से २३/०६ तक, पं. १९/०२ से, राज. २३/०६ से
८	श	१२	२४	५१	ध	०८	०६	६.३०	६.०८	६.२५	२.५४	कुंभ	पं.,
९	र	१३	०२	५४	श	१०	३०	६.३१	६.०७	६.२५	२.५४	मीन $\frac{०६}{२९}$	पं., र. १०/३० से
१०	सो	१४	०५	११	पू.भा.	१३	१०	६.३१	६.०६	६.२५	२.५४	मीन	पं., र. १३/१० तक, भ. ०५/११ से, सूर्य चित्रा में ०६/१० से, र. ०६/१० से
११	मं	१५	०	०	उ.भा.	१६	०१	६.३२	६.०५	६.२५	२.५३	मीन	पं., सि. और राज. १६/०१ तक, र. १६/०१ तक, भ. १८/२३ तक, व्या. १५/१७ से
१२	बु	१५	०७	३७	रे	१९	००	६.३२	६.०४	६.२५	२.५३	मेष $\frac{१९}{००}$	मृ. और कु. १९/०० से, पं. १९/०० तक, व्या. १६/०९ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१३	गु	१	१०	०९	अ	२२	०१	६.३३	६.०३	९.२५	२.५२	मेष	
१४	शु	२	१२	४०	भ	०१	००	६.३३	६.०२	९.२५	२.५२	मेष	राज. ०१/०० तक, भ. ०१/५५ से
१५	श	३	१५	०६	कृ	०३	५१	६.३४	६.०१	९.२६	२.५२	वृष. ०७/४४	भ. १५/०६ तक, अ. ०३/५१ से (प्रवेशे वर्ज्य), व्य. १८/५२ से
१६	र	४	१७	१९	रो	०६	२३	६.३५	५.५९	९.२६	२.५१	वृष.	व्य. १९/२९ तक
१७	सो	५	१९	०७	मृ	०	०	६.३५	५.५८	९.२६	२.५०	मि. १९/३०	अ. अहोरात्र, सूर्य तुला में २३/४७ से
१८	मं	६	२०	२४	मृ	०८	२९	६.३६	५.५७	९.२६	२.५०	मिथुन	र. ०८/२९ से, यम. ०८/२९ से, भ. २०/२४ से
१९	बु	७	२०	५९	आ	०९	५९	६.३७	५.५६	९.२७	२.४९	कर्क ०५/४०	भ. ०८/४७ तक, र. ०९/५९ तक
२०	गु	८	२०	४९	पुन	१०	४६	६.३७	५.५५	९.२७	२.४९	कर्क	सि. १०/४६ तक, गुरुपुष्यामृतयोग १०/४६ से (विवाहे वर्ज्य)
२१	शु	९	१९	५१	पु	१०	४७	६.३८	५.५४	९.२७	२.४९	कर्क	मृ. १०/४७ से, ज्वा. १९/५१ से
२२	श	१०	१८	०५	आ	१०	०१	६.३८	५.५३	९.२७	२.४९	सिं. १०/०१	भ. ०७/०४ से १८/०५ तक, ज्वा. १०/०१ तक
२३	र	११	१५	३६	म पू.फा.	०८ ०६	३० २२	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	सिंह	यम. ०८/३० तक, राज. १५/३६ से ०६/२२ तक
२४	सो	१२	१२	३२	उ.फा.	०३	४५	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	क. ११/४५	सूर्य स्वाति में १६/४३ से, वै. ०३/०४ से, धन तेरस, गाजबीज की अस्वाध्याय प्रारंभ
२५	मं	१३ १४	०९ ०५	०३ १७	ह	२४	४८	६.४०	५.५१	९.२८	२.४८	कन्या	भ. ०९/०३ से १९/११ तक, वै, २२/५० तक
२६	बु	३०	०१	२७	चि	२१	४५	६.४१	५.५१	९.२८	२.४७	तुला ११/५७	दीपावली, महावीर निर्वाण दिवस पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२७	गु	१	२१	४३	स्वा	१८	४५	६.४१	५.४६	६.२८	२.४७	तुला	श्री वीर निर्वाण संवत् २५३८
२८	शु	२	१८	१५	वि	१६	०१	६.४२	५.४८	६.२६	२.४६	वृ. $\frac{१०}{४१}$	राज. १६/०१ से, आचार्यश्री तुलसी का ६८वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)
२६	श	३	१५	१५	अ	१३	४३	६.४३	५.४८	६.२६	२.४६	वृश्चिक	र. १३/४३ से, भ. ०१/५७ से
३०	र	४	१२	५०	ज्ये	१२	००	६.४४	५.४७	६.३०	२.४६	धन $\frac{१२}{००}$	र. १२/०० तक, सि. १२/०० से, भ. १२/५० तक
३१	सो	५	११	०६	मू	१०	५७	६.४५	५.४६	६.३०	२.४५	धन	कु. १०/५७ तक, र. १०/५७ से
१	मं	६	१०	०६	पू.षा.	१०	४०	६.४५	५.४६	६.३०	२.४५	म. $\frac{१६}{४२}$	र, १०/४० तक, राज. १०/०६ से १०/४० तक
२	बु	७	०६	५८	उ.षा.	११	०८	६.४५	५.४५	६.३०	२.४५	मकर	भ. ०६/५८ से २२/१० तक
३	गु	८	१०	३३	श्र	१२	२१	६.४६	५.४४	६.३०	२.४४	कुंभ $\frac{०१}{१२}$	र. १२/२१ से, पं. ०१/१२ से
४	शु	६	११	४६	ध	१४	११	६.४६	५.४३	६.३०	२.४४	कुंभ	पं., र. अहोरात्र
५	श	१०	१३	३६	श	१६	३२	६.४७	५.४३	६.३१	२.४४	कुंभ	पं., र. १६/३२ तक, भ. ०२/४० से, व्या. १६/०१ से
६	र	११	१५	४८	पू.भा.	१६	१४	६.४८	५.४२	६.३२	२.४३	मीन $\frac{१२}{३२}$	पं., भ. १५/४८ तक, राज. १६/१४ से, सूर्य विशाखा में २४/४८ से, व्या. १६/४० तक
७	सो	१२	१८	१४	उ.भा.	२२	१०	६.४६	५.४१	६.३२	२.४३	मीन	पं.,
८	मं	१३	२०	४८	रे	०१	१०	६.५०	५.४०	६.३३	२.४२	मेष $\frac{०१}{१०}$	पं. ०१/१० तक, र. ०१/१० से, अ. ०१/१० से
६	बु	१४	२३	२०	अ	०४	१०	६.५१	५.४०	६.३३	२.४२	मेष	मृ. ०४/१० तक, भ. २३/२० से, र. ०४/१० तक, राज. ०४/१० से, व्य. २२/१८ से
१०	गु	१५	०१	४७	भ	०	०	६.५१	५.३६	६.३३	२.४२	मेष	भ. १२/३५ तक, व्य. २३/०६ तक चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
११	शु	१	०४	०२	भ	०७	०२	६.५२	५.३९	९.३४	२.४२	वृष. $\frac{१३}{४३}$	
१२	श	२	०६	०२	कृ	०९	४३	६.५३	५.३९	९.३४	२.४१	वृष.	अ. ०९/४३ से (प्रयाणे वर्ज्य)
१३	र	३	०	०	रो	१२	०७	६.५३	५.३८	९.३४	२.४१	मि. $\frac{०१}{१९}$	राज. १२/०७ से, भ. १८/५४ से
१४	सो	३	०७	४०	मृ	१४	१०	६.५४	५.३७	९.३५	२.४१	मिथुन	अ. १४/१० तक, भ. ०७/४० तक
१५	मं	४	०८	५२	आ	१५	४७	६.५५	५.३७	९.३६	२.४०	मिथुन	यम. १५/४७ तक, कु. १५/४७ से
१६	बु	५	०९	३३	पुन	१६	५४	६.५६	५.३६	९.३६	२.४०	कर्क $\frac{१०}{४०}$	कु. १६/५४ तक, र. १६/५४ से, सूर्य वृश्चिक में २३/३६ से
१७	गु	६	०९	४०	पु	१७	२५	६.५६	५.३५	९.३६	२.४०	कर्क	गुरुपुष्यामृतयोग १७/२५ तक (विवाहे वर्ज्य), भ. ०९/४० से २१/२९ तक, र. १७/२५ तक
१८	शु	७	०९	०९	आ	१७	२०	६.५७	५.३४	९.३६	२.३९	सिंह $\frac{१७}{२०}$	मृ. १७/२० तक
१९	श	८ ९	०८ ०६	०० १३	म	१६	३६	६.५८	५.३४	९.३७	२.३९	सिंह	वै. १७/३५ से
२०	र	१०	०३	५२	पू.फा.	१५	१६	६.५९	५.३४	९.३८	२.३९	क. $\frac{२०}{५१}$	सूर्य अनुराधा में ०६/५६ से, भ. १७/०७ से ०३/५२ तक, वै. १४/४३ तक, भगवान् महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस
२१	सो	११	०१	०२	उ.फा.	१३	२५	७.००	५.३४	९.३९	२.३८	कन्या	कु. १३/२५ से ०१/०२ तक
२२	मं	१२	२१	५२	ह	११	०९	७.०१	५.३४	९.३९	२.३८	तुला $\frac{२१}{५४}$	राज. ११/०९ से २१/५२ तक
२३	बु	१३	१८	२९	चि स्वा	०८ ०५	३६ ५४	७.०२	५.३४	९.४०	२.३८	तुला	भ. १८/२९ से ०४/४६ तक
२४	गु	१४	१५	०२	वि	०३	१४	७.०३	५.३४	९.४१	२.३८	वृ. $\frac{२१}{५४}$	
२५	शु	३०	११	४१	अ	२४	४६	७.०४	५.३४	९.४१	२.३७	वृश्चिक	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२६	श	१ २	०८ ०५	३६ ५४	ज्ये	२२	३९	७.०५	५.३३	९.४२	२.३७	धन $\frac{२२}{३९}$	
२७	र	३	०३	४८	मू	२१	०३	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	धन	सि. २१/०३ तक, र. २१/०३ से, राज. २१/०३ से ०३/४८ तक
२८	सो	४	०२	२२	पू.षा.	२०	०४	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	म. $\frac{०१}{५६}$	भ. १४/५९ से ०२/२२ तक, र. २०/०४ तक, मृ. २०/०४ से
२९	मं	५	०१	४१	उ.षा.	१९	४९	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	मकर	र. और कु. १९/४९ से
३०	बु	६	०१	४८	श्र	२०	२०	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	मकर	र. और कु. २०/२० तक, राज. ०१/४८ से, व्या. २४/५८ से
१	गु	७	०२	४१	ध	२१	३७	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	कुंभ $\frac{०८}{५४}$	पं. ०८/५४ से, भ. ०२/४१ से, व्या. २४/२७ तक
२	शु	८	०४	१६	श	२३	३५	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	कुंभ	पं., भ. १५/२४ तक, र. २३/३५ से
३	श	९	०६	२३	पू.भा.	०२	०५	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	मी. $\frac{१९}{२५}$	पं., सूर्य ज्येष्ठा में ११/०९ से, र. ११/०९ तक पुनः ०२/०५ से
४	र	१०	०	०	उ.भा.	०४	५७	७.०९	५.३४	९.४५	२.३६	मीन	पं., र. अहोरात्र, व्य. ०१/४० से
५	सो	१०	०८	५१	रे	०	०	७.१०	५.३४	९.४६	२.३६	मीन	पं., र. अहोरात्र, भ. २२/१० से, व्या. ०२/३३ तक
६	मं	११	११	२९	रे	०७	५९	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	मेष $\frac{०७}{५९}$	अ. ०७/५९ से (प्रवेशे वर्ज्य), र. ०७/५९ तक, पं. ०७/५९ तक, कु. ०७/५९ से ११/२९ तक, भ. ११/२९ तक
७	बु	१२	१४	०३	अ	१०	५९	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	मेष	मृ. १०/५९ तक, राज. १०/५९ से १४/०३ तक
८	गु	१३	१६	२५	भ	१३	५०	७.१२	५.३४	९.४८	२.३५	वृष. $\frac{२०}{३०}$	र. १३/५० से, यम. १३/५० से
९	शु	१४	१८	२८	कृ	१६	२२	७.१३	५.३४	९.४८	२.३५	वृषभ	र. १६/२२ तक, यम. १६/२२ से, भ. १८/२८ से
१०	श	१५	२०	०७	रो	१८	३२	७.१४	५.३४	९.४९	२.३५	वृषभ	अ. १८/३२ तक (प्रयाणे वर्ज्य), भ. ०७/२१ तक, चंद्रग्रहण पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
११	र	१	२१	१६	मृ	२०	१६	७.१५	५.३४	६.५०	२.३५	मि. $\frac{०७}{३७}$	
१२	सो	२	२२	०४	आ	२१	३४	७.१६	५.३५	६.५०	२.३५	मिथुन	
१३	मं	३	२२	२२	पुन	२२	२६	७.१६	५.३५	६.५१	२.३५	कर्क $\frac{१६}{१६}$	भ. १०/१६ से २२/२२ तक
१४	बु	४	२२	१२	पु	२२	५२	७.१७	५.३५	६.५२	२.३४	कर्क	वै. ०१/४२ से
१५	गु	५	२१	३७	आ	२२	५२	७.१८	५.३५	६.५२	२.३४	सिं. $\frac{२२}{५२}$	र. २२/५२ से, वै. २३/५७ तक
१६	शु	६	२०	३५	म	२२	२७	७.१८	५.३६	६.५२	२.३४	सिंह	कु. २०/३५ तक, सूर्य मूल और धनु में १४/१५ से, र. १४/१५ तक, भ. २०/३५ से, र. २२/२७ से, सि. और राज. २२/२७ से, मलमास प्रारंभ
१७	श	७	१६	१०	पू.फा.	२१	३६	७.१६	५.३६	६.५३	२.३४	क. $\frac{०३}{२३}$	भ. ०७/५५ तक, र. २१/३६ तक
१८	र	८	१७	२२	उ.फा.	२०	२८	७.१६	५.३७	६.५४	२.३४	कन्या	अ. २०/२८ से
१६	सो	६	१५	१३	ह	१८	५६	७.२०	५.३७	६.५४	२.३४	तुला $\frac{०६}{०८}$	कु. १५/१३ से १८/५६ तक, भ. ०२/०२ से
२०	मं	१०	१२	४८	चि	१७	१३	७.२०	५.३७	६.५४	२.३४	तुला	भ. १२/४८ तक, पार्श्वनाथ जयंती
२१	बु	११	१०	११	स्वा	१५	१६	७.२१	५.३८	६.५५	२.३४	तुला	
२२	गु	१२ / १३	०७ / ०४	२६ / ४२	वि	१३	१३	७.२१	५.३८	६.५५	२.३४	वृ. $\frac{०७}{४४}$	भ. ०४/४२ से
२३	शु	१४	०२	०३	अ	११	१२	७.२२	५.३६	६.५६	२.३४	वृश्चिक	भ. १५/२१ तक
२४	श	३०	२३	३८	ज्ये	०६	१६	७.२२	५.३६	६.५६	२.३४	धन $\frac{०६}{१६}$	ज्वा. २३/३८ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२५	र	१	२१	१६	मू. पू.षा.	०७ ०६	४३ ३२	७.२३	५.४०	६.५७	२.३४	धन	सि. ०७/४३ तक, ज्वा. ०७/४३ तक, राज. २१/३६ से ०६/३२ तक
२६	सो	२	२०	०४	उ.षा.	०५	५३	७.२३	५.४०	६.५७	२.३४	म. $\frac{१२}{१६}$	मृ. ०५/५३ तक, र. ०५/५३ से, सि. ०५/५३ से, व्या. १२/१० से
२७	मं	३	१६	०८	श्र	०५	५३	७.२४	५.४१	६.५८	२.३४	मकर	र. ०५/५३ तक, भ. ०६/५६ से, व्या. १०/०० तक
२८	बु	४	१८	५६	ध	०६	३५	७.२४	५.४१	६.५८	२.३४	कुंभ $\frac{१८}{०८}$	पं. १८/०८ से, भ. १८/५६ तक, र. ०६/३५ से
२९	गु	५	१९	२८	श	०	०	७.२५	५.४२	६.५९	२.३४	कुंभ	पं., सूर्य पूर्वाषाढ़ा में १६/२४ से, र. १६/२४ तक, व्य. ०६/५० से
३०	शु	६	२०	४४	श	०८	०१	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	मी. $\frac{०३}{३१}$	पं., र. ०८/०१ से, कु. ०८/०१ से २०/४४ तक, व्य. ०६/५२ तक
३१	श	७	२२	३८	पू.भा.	१०	०६	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	मीन	पं., र. १०/०६ तक, भ. २२/३८ से
१	र	८	०१	००	उ.भा.	१२	४३	७.२५	५.४४	१०.००	२.३५	मीन	पं., भ. ११/४६ तक
२	सो	९	०३	३७	रे	१५	४०	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	मेष $\frac{१५}{४०}$	पं. १५/४० तक र. १५/४० से, कु. ०३/३७ से
३	मं	१०	०६	१४	अ	१८	४३	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	मेष	र. अहोरात्र, अ. १८/४३ तक (प्रवेशे वर्ज्य), कु. १८/४३ तक
४	बु	११	०	०	भ	२१	३९	७.२७	५.४६	१०.०२	२.३५	वृष. $\frac{०४}{२०}$	भ. १९/२८ से, र. २१/३९ तक, सि. २१/३९ से
५	गु	११	०८	३६	कृ	२४	१४	७.२७	५.४७	१०.०२	२.३५	वृष.	यम. २४/१४ तक, भ. ०८/३६ तक
६	शु	१२	१०	३४	रो	०२	२१	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	वृष.	यम. ०२/२१ तक, र. ०२/२१ से
७	श	१३	११	५८	मृ	०३	५५	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	मि. $\frac{१५}{१२}$	र. ०३/५५ तक
८	र	१४	१२	४७	आ	०४	५४	७.२७	५.४९	१०.०२	२.३५	मिथुन	भ. १२/४७ से २४/५८ तक पक्खी
९	सो	१५	१३	०१	पुन	०५	२०	७.२७	५.५०	१०.०३	२.३६	कर्क $\frac{२३}{१५}$	कु. १३/०१ से ०५/२० तक, वै. ०९/२३ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१०	मं	१	१२	४०	पु	०५	१७	७.२७	५.५१	१०.०३	२.३६	कर्क	राज. १२/४० से २१/१७ तक, वै. ०७/५८ तक
११	बु	२	११	५२	आ	०४	४६	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	सिंह $\frac{०५}{४६}$	सूर्य उत्तराषाढ़ा में १८/२६ से, भ. २३/१६ से
१२	गु	३	१०	४१	म	०४	०३	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	सिंह	भ. १०/४१ तक
१३	शु	४	०६	१२	पू.फा.	०३	०२	७.२७	५.५३	१०.०३	२.३६	सिंह	सि. ०३/०२ तक
१४	श	५ / ६	०७ / ०५	२६ / ३७	उ.फा.	०१	५२	७.२७	५.५४	१०.०४	२.३७	क. $\frac{०८}{४६}$	सूर्य मकर में २४/१६ से, र. ०१/५२ से, मृ. और यम. ०१/५२ से, भ. ०५/३७ से, मलमास समाप्त
१५	र	७	०३	३६	ह	२४	३६	७.२७	५.५५	१०.०४	२.३७	कन्या	अ. २४/३६ तक, भ. १६/३६ तक, र. २४/३६ तक, राज. २४/३६ से ०३/३६ तक
१६	सो	८	०१	३८	चि	२३	१५	७.२७	५.५६	१०.०४	२.३७	तुला $\frac{११}{५६}$	
१७	मं	६	२३	३५	स्वा	२१	५३	७.२७	५.५७	१०.०५	२.३८	तुला	कु. २३/३५ से
१८	बु	१०	२१	३२	वि	२०	३१	७.२७	५.५८	१०.०५	२.३८	वृ. $\frac{१४}{५२}$	भ. १०/३३ से २१/३२ तक, कु. २०/३१ तक, अ. २०/३१ से
१६	गु	११	१६	३१	अ	१६	११	७.२७	५.५६	१०.०५	२.३८	वृश्चिक	
२०	शु	१२	१७	३६	ज्ये	१७	५७	७.२६	५.५६	१०.०५	२.३८	धन $\frac{१७}{५७}$	व्या. २४/४० से
२१	श	१३	१५	५१	मू	१६	५३	७.२५	६.००	१०.०४	२.३६	धन	भ. १५/५१ से ०३/०४ तक, व्या. २२/०४ तक
२२	र	१४	१४	२१	पू.षा.	१६	०३	७.२४	६.००	१०.०३	२.३६	म. $\frac{२१}{५४}$	
२३	सो	३०	१३	१०	उ.षा.	१५	३३	७.२४	६.०१	१०.०३	२.३६	मकर	मृ. १५/३३ तक, कु. १५/३३ से, सि. १५/३३ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२४	मं	१	१२	२८	श्र	१५	३१	७.२४	६.०२	१०.०३	२.३६	कुंभ $\frac{०३}{३१}$	कु. १२/२८ तक, राज. १५/३१ से, सूर्य श्रवण में २०/४३ से, पं. ०३/४१ से, व्य. १५/५४ से
२५	बु	२	१२	१८	ध	१६	००	७.२४	६.०३	१०.०३	२.४०	कुंभ	पं., राज. १६/०० तक, व्य. १४/३६ तक
२६	गु	३	१२	४४	श	१७	०६	७.२३	६.०३	१०.०३	२.४१	कुंभ	पं., र. १७/०६ से, भ. ०१/१२ से, गणतंत्र दिवस
२७	शु	४	१३	४६	पू.भा.	१८	५०	७.२२	६.०४	१०.०३	२.४१	मीन $\frac{१२}{३१}$	पं., भ. १३/४६ तक, कु. १३/४६ से १८/५० तक, र. १८/५० तक
२८	श	५	१५	३२	उ.भा.	२१	०६	७.२२	६.०५	१०.०३	२.४१	मीन	पं., र. २१/०६ से, वसंत पंचमी
२६	र	६	१७	४६	रे	२३	५५	७.२२	६.०६	१०.०३	२.४१	मेष $\frac{२३}{५५}$	पं. २३/५५ तक, र. २३/५५ तक, आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव : तृतीय चरण
३०	सो	७	२०	२१	अ	०२	५७	७.२२	६.०७	१०.०३	२.४१	मेष	भ. २०/२१ से, १४८वां मर्यादा महोत्सव
३१	मं	८	२३	००	भ	०६	००	७.२२	६.०८	१०.०३	२.४१	मेष	भ. ०६/४१ तक, र. ०६/०० से
१	बु	६	०१	२६	कृ	०	०	७.२२	६.०६	१०.०३	२.४२	वृष. $\frac{१२}{४४}$	र. और सि. अहोरात्र
२	गु	१०	०३	३२	कृ	०८	४६	७.२२	६.०६	१०.०३	२.४२	वृषभ	र. अहोरात्र, यम. ०८/४६ तक
३	शु	११	०४	५७	रो	११	१०	७.२१	६.१०	१०.०३	२.४२	मि. $\frac{२४}{०७}$	कु. और यम. ११/१० तक, र. ११/१० तक, भ. १६/२० से ०४/५७ तक, राज. ०४/५७ से, वै. १७/३६ से
४	श	१२	०५	३६	मृ	१२	५३	७.२१	६.११	१०.०३	२.४२	मिथुन	वै. १७/१७ तक
५	र	१३	०५	३५	आ	१३	५४	७.२०	६.१२	१०.०३	२.४३	मिथुन	र. १३/५४ से
६	सो	१४	०४	४८	पुन	१४	११	७.१६	६.१३	१०.०३	२.४४	कर्क $\frac{०८}{११}$	र. १४/११ तक, सूर्य धनिष्ठा में २३/५३ से, र. २३/५३ से, भ. ०४/४८ से
७	मं	१५	०३	२५	पु	१३	४८	७.१६	६.१४	१०.०३	२.४४	कर्क	राज. १३/४८ तक, र. १३/४८ तक, भ. १६/१० तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
८	बु	१	०१	३१	आ	१२	५२	७.१८	६.१५	१०.०२	२.४४	सिंह $\frac{१२}{१२}$	कु. १२/५२ से ०१/३१ तक
९	गु	२	२३	१९	म	११	३१	७.१७	६.१६	१०.०२	२.४५	सिंह	
१०	शु	३	२०	५४	पू.फा.	०९	५४	७.१६	६.१७	१०.०१	२.४५	क. $\frac{१५}{२८}$	सि. और राज. ०९/५४ तक, भ. १०/०७ से २०/५४ तक
११	श	४	१८	२५	उ.फा. / ह	०८ / ०६	०८ / २३	७.१५	६.१७	१०.००	२.४६	कन्या	मृ. और यम. ०८/०८ से ०६/२३ तक
१२	र	५	१५	५९	चि	०४	४३	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	तुला $\frac{१७}{३२}$	र. ०४/४३ से
१३	सो	६	१३	४०	स्वा	०३	१३	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	तुला	भ. १३/४० से २४/३५ तक, सूर्य कुम्भ में १३/५९ से, र. ०३/१३ तक, यम. ०३/१३ से
१४	मं	७	११	३४	वि	०१	५७	७.१३	६.१९	९.५९	२.४७	वृ. $\frac{२०}{१५}$	
१५	बु	८	०९	४१	अ	२४	५४	७.१२	६.२०	९.५९	२.४७	वृश्चिक	अ. २४/५४ तक, व्या. १०/१३ से
१६	गु	९ / १०	०८ / ०६	०२ / ३९	ज्ये	२४	०७	७.१२	६.२१	९.५९	२.४७	धन $\frac{२४}{०७}$	भ. १९/१९ से ०६/३९ तक, व्या. ०७/४० तक
१७	शु	११	०५	३१	मू	२३	३४	७.११	६.२१	९.५९	२.४८	धन	कु. २३/३४ तक, राज. ०५/३१ से
१८	श	१२	०४	३९	पू.षा.	२३	१७	७.१०	६.२२	९.५८	२.४८	म. $\frac{०५}{१५}$	व्य. ०१/२० से
१९	र	१३	०४	०६	उ.षा.	२३	१७	७.१०	६.२३	९.५८	२.४८	मकर	भ. ०४/०६ से, सूर्य शतभिषा में ०४/२५ से, व्य. २३/३९ तक
२०	सो	१४	०३	५४	श्र	२३	३८	७.०९	६.२३	९.५७	२.४८	मकर	सि. २३/३८ तक, भ. १५/५७ तक
२१	मं	३०	०४	०६	ध	२४	२१	७.०८	६.२४	९.५७	२.४९	कुंभ $\frac{११}{१६}$	पं. ११/५६ से, मृ. २४/२१ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२२	बु	१	०४	४६	श	०१	३२	७.०७	६.२४	९.५६	२.४९	कुंभ	पं., कु. ०१/३२ से ०४/४६ तक
२३	गु	२	०५	५८	पू.भा.	०३	११	७.०६	६.२५	९.५६	२.५०	मीन $\frac{२०}{४४}$	पं.,
२४	शु	३	०	०	उ.भा.	०५	२१	७.०५	६.२५	९.५५	२.५०	मीन	पं., राज. ०५/२१ तक, र. ०५/२१ से, अ. ०५/२१ से
२५	श	३	०७	४१	रे	०	०	७.०४	६.२६	९.५४	२.५१	मीन	पं., र. अहोरात्र, भ. २०/४३ से
२६	र	४	०९	५२	रे	०७	५९	७.०३	६.२७	९.५४	२.५२	मेष $\frac{०७}{५९}$	पं. और र. ०७/५९ तक, भ. ०९/५२ तक
२७	सो	५	१२	२४	अ	१०	५६	७.०२	६.२७	९.५३	२.५२	मेष	कु. १०/५६ तक, र. १०/५६ से, ज्वा. १०/५६ से १२/२४ तक
२८	मं	६	१५	०५	भ	१४	०४	७.०१	६.२८	९.५३	२.५२	वृष. $\frac{२०}{५१}$	र. १४/०४ तक, वै. २३/१३ से
२९	बु	७	१७	४२	कृ	१७	०७	७.००	६.२८	९.५३	२.५२	वृषभ	सि. १७/०७ तक, भ. १७/४२ से ०६/५२ तक, वै. २४/०४ तक
१	गु	८	१९	५६	रो	१९	५०	६.५९	६.२९	९.५२	२.५३	वृषभ	र. १९/५० से, मृ. १९/५० से
२	शु	९	२१	३४	मृ	२२	००	६.५८	६.३०	९.५१	२.५३	मि. $\frac{०९}{००}$	र. अहोरात्र
३	श	१०	२२	२७	आ	२३	२५	६.५७	६.३०	९.५०	२.५३	मिथुन	र. २३/२५ तक
४	र	११	२२	३०	पुन	२४	०१	६.५६	६.३०	९.५०	२.५३	कर्क $\frac{१७}{५८}$	सूर्य पूर्वा भाद्रपद में १०/४० से, र. १०/४० से २४/०१ तक, भ. १०/३५ से २२/३० तक, राज. २४/०१ से
५	सो	१२	२१	४१	पु	२३	४८	६.५५	६.३१	९.४९	२.५४	कर्क	
६	मं	१३	२०	०७	आ	२२	५१	६.५४	६.३१	९.४८	२.५४	सिंह $\frac{२२}{५१}$	र. २२/५१ से
७	बु	१४	१७	५४	म	२१	१६	६.५३	६.३२	९.४८	२.५५	सिंह	भ. १७/५४ से ०४/३५ तक, र. २१/१६ तक, राज. २१/१६ से, होलिका, चातुर्मासिक पक्खी
८	गु	१५	१५	११	पू.फा.	१९	१३	६.५२	६.३३	९.४७	२.५५	क. $\frac{२४}{३९}$	धूलेटी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र. प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
९	शु	१	१२	०८	उ.फा.	१६	५३	६.५१	६.३४	९.४७	२.५६	कन्या	
१०	श	२ ३	०८ ०५	५७ ४६	ह	१४	२७	६.५०	६.३४	९.४६	२.५६	तुला $\frac{०१}{१४}$	मृ. और यम. १४/२७ तक, भ. १९/२१ से ०५/४६ तक
११	र	४	०२	४५	चि	१२	०४	६.४९	६.३४	९.४५	२.५६	तुला	व्या. २१/४० से
१२	सो	५	२४	०२	स्वा	०९	५३	६.४८	६.३५	९.४५	२.५७	वृ. $\frac{०२}{२६}$	कु. ०९/५३ से, यम. ०९/५३ से, व्या. १८/१० तक
१३	मं	६	२१	४०	वि अ	०८ ०६	०० ३१	६.४७	६.३५	९.४४	२.५७	वृश्चिक	कु. ०८/०० तक, र. ०८/०० से ०६/३१ तक, भ. २१/४० से, राज. २१/४० से ०६/३१ तक
१४	बु	७	१९	४४	ज्ये	०५	२९	६.४६	६.३६	९.४४	२.५७	धन $\frac{०५}{२९}$	भ. ०८/३९ तक, सूर्य मीन में १०/५२ से, यम. ०५/२९ से, मलमास आरंभ
१५	गु	८	१८	१६	मू	०४	५५	६.४५	६.३७	९.४३	२.५८	धन	व्य. ०९/४१ से, भगवान ऋषभ दीक्षा दिवस, वर्षीतप प्रारंभ
१६	शु	९	१७	१६	पू.षा.	०४	४८	६.४४	६.३८	९.४२	२.५९	धन	भ. ०४/५६ से, व्य. ०७/३३ तक
१७	श	१०	१६	४३	उ.षा.	०५	०६	६.४३	६.३९	९.४२	२.५९	म. $\frac{१०}{२१}$	भ. १६/४३ तक, सूर्य उत्तरा भाद्रपद में १९/११ से
१८	र	११	१६	३५	श्र	०५	४९	६.४२	६.३९	९.४१	२.५९	मकर	राज. ०५/४९ से
१९	सो	१२	१६	५२	ध	०	०	६.४१	६.३९	९.४०	२.५९	कुंभ $\frac{१८}{२०}$	पं. १८/२० से
२०	मं	१३	१७	३३	ध	०६	५६	६.४०	६.३९	९.४०	३.००	कुंभ	पं., मृ. ०६/५६ से, भ. १७/३३ से ०६/०३ तक
२१	बु	१४	१८	३९	श	०८	२६	६.३९	६.४०	९.३९	३.००	मीन $\frac{०३}{२९}$	पं.
२२	गु	३०	२०	०८	पू.भा.	१०	१९	६.३८	६.४१	९.३९	३.०१	मीन	पं. पक्खी

महीना		कोलकाता		दिल्ली		मुम्बई		चेन्नई		बैंगलोर		जोधपुर	
		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	१	६.१७	५.०३	७.१४	५.३५	७.१२	६.१२	६.२९	५.५४	६.४२	६.०४	७.२८	५.५२
	१५	६.१९	५.१२	७.१५	५.४६	७.१५	६.२१	६.३४	६.०३	६.४६	६.१२	७.३१	६.०१
फरवरी	१	६.१६	५.२४	७.१०	६.००	७.१३	६.३१	६.३८	६.२१	६.४७	६.२१	७.२६	६.१५
	१५	६.०९	५.३२	७.००	६.११	७.०८	६.३८	६.३०	६.१६	६.४३	६.२५	७.२७	६.२५
मार्च	१	५.५८	५.४०	६.४७	६.२०	६.५८	६.४४	६.२४	६.१८	६.३६	६.२८	७.०५	६.३३
	१५	५.४६	५.४६	६.३२	६.२९	६.४८	६.४८	६.१६	६.२०	६.२७	६.३१	६.५१	६.४१
अप्रैल	१	५.३०	५.५२	६.१२	६.३९	६.३३	६.५२	६.०५	६.२१	६.१७	६.३१	६.३४	६.५०
	१५	५.१७	५.५७	५.५६	६.४७	६.२२	६.५६	५.५७	६.२२	६.०८	६.३२	६.१९	६.५६
मई	१	५.०४	६.०३	५.४१	६.५६	६.११	७.०२	५.४९	६.२४	५.५९	६.३५	६.०४	७.०५
	१५	४.५७	६.०९	५.३१	७.०४	६.०५	७.०६	५.४५	६.२८	५.५४	६.३८	५.५५	७.१२
जून	१	४.५२	६.१७	५.२४	७.१४	६.०१	७.१२	५.४३	६.३२	५.५२	६.४२	५.४९	७.२०
	१५	४.५२	६.२२	५.२३	७.२०	६.०१	७.१७	५.४५	६.३७	५.५३	६.४७	५.४८	७.२६
जुलाई	१	४.५५	६.२५	५.२७	७.२३	६.०५	७.२०	५.४८	६.३९	५.५८	६.५०	५.५१	७.२९
	१५	५.०१	६.२४	५.३३	७.२१	६.१०	७.१९	५.५२	६.३९	६.०१	६.५०	५.५८	७.२७
अगस्त	१	५.०८	६.१७	५.४२	७.१२	६.१६	७.१४	५.५५	६.३६	६.०५	६.४७	६.०५	७.२१
	१५	५.१३	६.०८	५.५०	७.०१	६.२०	७.०६	५.५८	६.२९	६.०८	६.४०	६.१३	७.११
सितम्बर	१	५.१९	५.५४	५.५९	६.४३	६.२४	६.५३	५.५९	६.१९	६.०९	६.३१	६.१९	६.५५
	१५	५.२३	५.४०	६.०६	६.२६	६.२६	६.४१	५.५८	६.०९	६.०९	६.२१	६.२४	६.४०
अक्टूबर	१	५.२८	५.२४	६.१४	६.०७	६.२९	६.२७	५.५८	५.५८	६.१०	६.१०	६.३३	६.२२
	१५	५.३३	५.१२	६.२२	५.५२	६.३३	६.१६	५.५९	५.४९	६.११	६.०१	६.४०	६.०७
नवम्बर	१	५.४२	४.५९	६.३३	५.३६	६.३९	६.०५	६.०२	५.४२	६.१४	५.५४	६.४९	५.५३
	१५	५.४९	४.४३	६.४४	५.२७	६.४६	६.००	६.०७	५.३९	६.२०	५.५०	७.००	५.४४
दिसम्बर	१	६.००	४.५१	६.५६	५.२४	६.५६	६.००	६.१३	५.४१	६.२६	५.५१	७.११	५.४२
	१५	६.०९	४.५४	७.०६	५.२६	७.०४	६.०४	६.२२	५.४६	६.३४	५.५६	७.२१	५.४३

नक्षत्र से राशि और नामाक्षर का ज्ञान

जिस दिन बालक का जन्म हो, उस समय का नक्षत्र पंचांग में देखें, फिर नक्षत्र के अनुसार नाम का अक्षर और राशि नीचे लिखी तालिका से जानें–

अक्षर	नक्षत्र	राशि	अक्षर	नक्षत्र	राशि
चू चे चो ला	अश्विनी	मेष	पे पो, रा री	चित्रा	कन्या-२, तुला-२
ली लू ले लो	भरणी	मेष	रू रे रो ता	स्वाति	तुला
आ, ई उ ए	कृतिका	मेष-१, वृष-३	ती तू ते, तो	विशाखा	तुला-३, वृश्चिक-१
ओ वा वी वू	रोहिणी	वृष	ना नी नू ने	अनुराधा	वृश्चिक
वे वो, क की	मृगशिरा	वृष-२, मिथुन-२	नो या यी यु	ज्येष्ठा	वृश्चिक
कु घ ड़ छ	आर्द्रा	मिथुन	ये यो भा भी	मूल	धन
के को ह, ही	पुनर्वसु	मिथुन-३, कर्क-१	भू धा फा ढ़ा	पूर्वाषाढ़ा	धन
हु हे हो डा	पुष्य	कर्क	भे, भो जा जी	उत्तराषाढ़ा	धन-१, मकर-३
डी डू ड डो	आश्लेषा	कर्क	खा खू खे खो	श्रवण	मकर
मा मी मू मे	मघा	सिंह	गा गी, गू गे	धनिष्ठा	मकर-२, कुम्भ-२
मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी	सिंह	गो सा सि सू	शतभिषा	कुम्भ
टे, टो प पी	उत्तराफाल्गुनी	सिंह-१, कन्या-३	से सो द, दि	पूर्वाभाद्रपद	कुम्भ-३, मीन-१
पू ष ण ठ	हस्त	कन्या	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपद	मीन
			दे दो च ची	रेवती	मीन

राशि स्वामी–मेष और वृश्चिक का मंगल, वृषभ और तुला का शुक्र, मिथुन और कन्या का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का सूर्य, धन और मीन का गुरु, मकर और कुम्भ का स्वामी शनि होता है।

गुरु-दर्शन के लिए नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, श्रवण, अनुराधा तथा शुभ वार।

घात-चक्रम्

घात तिथि घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जये प्राज्ञैरन्य कर्मसुशोभनम्॥

राशि–	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास–	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि–	१-६-११	५-१०-१५	१-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार–	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र–	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात प्रहर–	१	४	३	१	१	१	१	१	१	४	३	४
पु. घात चंद्र–	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धन	वृषभ	मीन	सिंह	धन	कुम्भ
स्त्री घात चंद्र–	मेष	धन	धन	मीन	वृश्चिक		मीन	धन	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित होने वाले महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम

कार्यक्रम	स्थान	दिनांक	सम्पर्क सूत्र
महावीर जयन्ती	सिसोदा	१६ अप्रैल २०११	श्री रमेशकुमार धाकड़ ०९८२१०१३५७०
अक्षय तृतीया	रिछेड़	६ मई २०११	श्री बाबूलाल कच्छारा ०९३२४०१११२१
आ. म. अमृत महोत्सव शुभारम्भ एवं पदाभिषेक समारोह	कांकरोली	१२-१३ मई २०११	श्री धर्मेश डांगी ०९८५०३०६२९९
वर्ष २०११ का चातुर्मास	केलवा	१५ जुलाई-१० नवम्बर २०११	श्री महेन्द्र कोठारी ०९८२९०४०२२४
१४८वां मर्यादा महोत्सव	आमेट	२८-३० जनवरी २०१२	श्री धर्मेश खाब्या ०९४१३०२५१५४

यात्रा में चंद्र विचार	यात्रा में योगिनी विचार
मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे, वृषे च कन्या मकरे च याम्ये। युग्मे तुले कुंभसु पश्चिमायां, कार्कालि मीने दिशिचोत्तरस्याम्॥ अर्थ– मेष, सिंह, धन पूर्व। वृष कन्या, मकर दक्षिण। मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन उत्तर। फलम्– सन्मुखे अर्थलाभाय, दक्षिणे सुखसंपदा। पृष्ठे तु प्राणनाशाय, वामे चंद्रे धनक्षयः॥ अर्थ– सन्मुख का चन्द्रमा, धनदाता दाहिना सुखदाता। पीठ का प्राण-हर्ता और बायां धन-हर्ता।	ईशान ३०/८ — पूर्व १/९ — अग्नि ३/११ उत्तर २/१० — दक्षिण ५/१३ योगिनी सुखदा वामे। पृष्ठे वांछित दायिनी॥ दक्षिणे धनहंत्री च। सन्मुखे मरणप्रदा॥ वायव्य ७/१५ — पश्चिम ६/१४ — नैर्ऋत्य ४/१२
दिशाशूल-विचार-चक्रम्	**काल-राहु-विचार-चक्रम्**
पूर्व: चन्द्र, शनि उत्तर: मंगल, बुध — दक्षिण: गुरु दिशाशूल ले जावो वामे। राहू योगिनी पूठ॥ सन्मुख लेवै चन्द्रमा। लावे लक्ष्मी लूट॥ पश्चिम: रवि, शुक्र	ईशान — पूर्व: शनि — अग्नि: शुक्र उत्तर: रवि — दक्षिण: गुरु अर्कोत्तरो वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋते च याम्ये गुरौ वह्निदिशा च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंति काल। वायव्य: सोम — पश्चिम: मंगल — नैर्ऋत्य: बुध

अभिजित मुहूर्त–दिनमान का आधा करने से जो समय प्राप्त हो उस समय से २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद तक अभिजित मुहूर्त रहता है, जो नगर प्रवेश आदि में श्रेष्ठ माना जाता है। इस मुहूर्त का बुधवार के दिन निषेध है।

सुयोग-कुयोग चक्र

योग	तिथि या नक्षत्र	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि	तिथि			३,८,१३ (जया)	२,७,१२ (भद्रा)	५,१०,१५ (पूर्णा)	१,६,११ (नंदा)	४,९,१४ (रिक्ता)
	–नक्षत्र	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
अमृतसिद्धि	–नक्षत्र	हस्त	मृगशिरा	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थसिद्धि	–नक्षत्र	मू. ह. पुष्य अश्वि. रे. उत्तरा-३	अनु. श्र. रो. कृ. पुष्य	उ. भा. अश्वि. कृ. आश्ले.	ह. कृ. रो. मृ. अनु.	पुन. पुष्य. रे. अनु. अश्वि.	अश्वि. रे. श्र. पुन. अनु.	रो. स्वा. श्र.
आनन्द	–नक्षत्र	अश्वि.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ.षा.	श.
मृत्यु	तिथि–	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	२,७,१२	४,९,१४	५,१०,१५,३०
	–नक्षत्र	अनु.	उ. षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.
कालयोग	–नक्षत्र	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पू. भा.

विशेष सुयोग (१) २,३,७,१२,१५ तिथि, रविवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार तथा भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पू. षा., चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, उ.भा. नक्षत्र–इनमें तीनों का सुयोग मिलने पर राजयोग बनता है, जो विशेष सिद्धि-दायक है।

(२) १,५,६,१०,११ तिथि, सोम, मंगल, बुध, शुक्रवार तथा अश्वि., रो., पुन., मघा, ह., वि., मू., श्र., पू. भा. नक्षत्र–इनमें तीनों का संयोग मिलने पर कुमार योग बनता है, जो शुभ है।

विशेष कुयोग– यदि एकम तिथि को मूल नक्षत्र हो, पंचमी को भरणी हो, अष्टमी को कृतिका हो, नवमी को रोहिणी हो, दशमी को आश्लेषा हो तो ज्वालामुखी योग बनता है, जो सब कार्यों में वर्जित है।

ज्ञातव्य– (क) सुयोग और कुयोग दोनों होने पर कुयोग का फल नहीं रहता।

(ख) अभिजित नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण तथा श्रवण का प्रथम पन्द्रहवां भाग अभिजित नक्षत्र होता है।

पौरसी प्रमाण

दिनांक	पग	आंगुल	घंटा	मिनट
२१ अप्रैल	२	८	३	१२
२२ मई	२	४	३	२२
२२ जून	२	०	३	२७
२४ जुलाई	२	४	३	२२
२४ अगस्त	२	८	३	१२
२३ सितम्बर	३	०	३	०
२३ अक्टूबर	३	४	२	४८
२१ नवम्बर	३	८	२	३८
२२ दिसम्बर	४	०	२	३४
२० जनवरी	३	८	२	३८
२१ फरवरी	३	४	२	४८
२० मार्च	३	०	३	०

राहु-काल

वार	समय	राहु-काल वेला
रवि	सायं	४-३० से ६-००
सोम	प्रातः	७-३० से ९-००
मंगल	मध्याह्न	३-०० से ४-३०
बुध	मध्याह्न	१२-०० से १-३०
गुरु	मध्याह्न	१-३० से ३-००
शुक्र	प्रातः	१०-३० से १२-००
शनि	प्रातः	९-०० से १०-३०

टिप्पण : राहु काल (समय) में यात्रा करना वर्जित है।

दिन के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

अध्यात्म ऊर्जा का केन्द्र : जैन विश्व भारती

विश्व इतिहास में मानव संस्कृति को सार्थक दिशा देने वाले महापुरुषों में क्रांतिकारी द्रष्टा, विश्वसंत गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के स्वप्नों की साकार प्रतिमान जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध, साधना एवं सेवा के विशेष उद्देश्यों के साथ सन् १९७० में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई। जैन विश्व भारती अहिंसा और शांति का अनुपम सांस्कृतिक केन्द्र है। शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय इन सात महान प्रवृत्तियों को अपने आपमें समेटे हुए यह संस्था तपोवन का रूप ले चुकी है और यहां के प्रकंपन यह इंगित दे रहे हैं कि यह प्राचीन काल से कोई तपोभूमि रही है।

शिक्षा

जैन विश्व भारती की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई थी उनमें से एक मुख्य प्रवृत्ति है–शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु यहां प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में वर्तमान में विमल विद्या विहार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल तथा महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं टमकोर संचालित हैं। मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से अब तक लगभग ४५,००० विद्यार्थियों ने शिक्षा प्राप्त की है जिनमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने उच्च पदों पर पहुंच कर संस्था का गौरव बढ़ाया है।

भावी पीढ़ी में संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से '**समण संस्कृति संकाय**' के अंतर्गत जैन विद्या की शिक्षा प्रदान की जाती है।

मनुष्य के बौद्धिक विकास के साथ मानसिक, भावनात्मक और चारित्रिक विकास हेतु आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने **'जीवन विज्ञान'** की परिकल्पना प्रस्तुत की। ध्यान, योग एवं शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा का यह क्रांतिकारी प्रयोग जैन विश्व भारती के अंतर्गत **'केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी'** द्वारा साकार हो रहा है।

सेवा

शिक्षा के साथ-साथ सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी है। जैन विश्व भारती परिसर में **'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला'** तथा बीदासर में **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र'** सुचारु रूप से संचालित हैं।

'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' द्वारा चिकित्सा सेवा विषयक जन-कल्याणकारी प्रवृत्ति का संचालन किया जाता है। यहां जिन औषधियों का निर्माण होता है वे आयुर्वेद विभाग से प्राप्त ड्रग मैन्युफैक्चरिंग लाइसेंस के अंतर्गत जी.एम.पी. प्रमाणित हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर एवं फिजियोथेरेपी पद्धति से रोगियों की चिकित्सा हेतु **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र'** की स्थापना जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में बीदासर में की गई। यहां आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यायाम की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान में केन्द्र के अंतर्गत होमियोपैथिक चिकित्सा से रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है।

साधना

प्रेक्षाध्यान–आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा निर्देशित प्रेक्षाध्यान पद्धति के निरंतर प्रयोग, प्रशिक्षण एवं शोध का केन्द्र है, जैन विश्व भारती स्थित–**'तुलसी अध्यात्म नीडम्'** जहां योग एवं अध्यात्म साधना के अभ्यास एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के भाव परिष्कार व संवेग परिवर्तन के प्रयोग होते हैं। सन् १९७८ में स्थापित तुलसी अध्यात्म नीडम् का उद्देश्य है–प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण, विकास एवं अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना।

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका **'प्रेक्षाध्यान'** का विगत ३० वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

साहित्य

साहित्य प्रकाशन एवं वितरण–साहित्य प्रकाशन एवं वितरण जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान आदि से संबंधित साहित्य के साथ आचार्य भिक्षु, श्रीमद् जयाचार्य, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण एवं साधु-साध्वियों, समण-समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/सम्पादित साहित्य का प्रकाशन विगत लगभग ३७ वर्षों से किया जा रहा है। जैन विश्व भारती गत २-३ वर्षों से अन्तरराष्ट्रीय स्तर के अन्य प्रकाशकों के साथ मिलकर भी साहित्य प्रकाशन व वितरण का कार्य कर रही है।

शोध

जैन विश्व भारती की स्थापना के उद्देश्यों में **शोध** का विशेष स्थान है। पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने इसकी स्थापना के उद्देश्यों में जैन धर्म एवं दर्शन के उच्च-स्तरीय शोध संस्थान की परिकल्पना सामने रखी थी। उसी परिकल्पना की सुखद परिणति स्वरूप जैन विश्व भारती की शोध प्रवृत्ति के अंतर्गत आगम सम्पादन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। यह कार्य पूर्व में आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशन में चल रहा है। आगम सम्पादन के प्रबन्धन का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग–जैन विश्व भारती में अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ जैन हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनकी सुरक्षा एवं संरक्षण जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है।

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान–जैन विश्व भारती द्वारा कुल १० पुरस्कारों का संचालन विभिन्न प्रायोजकों के सहयोग से किया जा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार, आचार्य तुलसी अनेकान्त सम्मान, आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार, संघ सेवा पुरस्कार, जय तुलसी विद्या पुरस्कार, आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान, महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषी पुरस्कार, प्रज्ञा पुरस्कार, जीवन विज्ञान पुरस्कार, गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार आदि पुरस्कारों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं देने एवं उल्लेखनीय कार्य करने वालों को प्रोत्साहित किया जाता है और उनकी प्रतिभा का सम्यक् मूल्यांकन किया जाता है।

संस्कृति

तुलसी कलादीर्घा–जैन विश्व भारती में स्थित तुलसी कलादीर्घा (आर्ट गैलरी) में जैन धर्म को दर्शाने वाली प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों एवं हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री का संग्रह किया गया है। दुर्लभ, कलापूर्ण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व की प्रदर्शन योग्य सामग्री के साथ तेरापंथ के आचार्यों को सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से संबंधित प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र तथा अन्य सामग्री को यहां पर शो विंडो में कलापूर्ण ढंग से सुसज्जित किया गया है।

उक्त सभी गतिविधियों के साथ सुरम्य हरीतिमा से सुशोभित परिसर जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कह रहा है। जैन विश्व भारती परिवार आप सभी को सादर आमंत्रित करता है। आप यहां पधारें एवं यहां संचालित गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। संस्था के विकास हेतु आपके अमूल्य सुझावों एवं विचारों का स्वागत है। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें–

जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं - ३४१३०६, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन : (०१५८१) २२२०२५/०८०, फैक्स : २२३२८०,
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

उच्च शिक्षा का एक अद्वितीय केन्द्र

जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं

जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं द्वारा उच्च शिक्षा के साथ-साथ अनेकांत, अहिंसा, सहिष्णुता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के उच्च आदर्शों को मानवजाति में स्थापित करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास हो रहा है। गुरुदेव श्री तुलसी प्राच्य विद्या के लिए समर्पित इस विश्वविद्यालय के प्रथम संवैधानिक अनुशास्ता (नैतिक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शक) बने। आचार्य महाप्रज्ञ इस विश्वविद्यालय के द्वितीय एवं आचार्य महाश्रमण वर्तमान अनुशास्ता हैं एवं श्री लालचंद सिंघी कुलाधिपति हैं। कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा के कुशल एवं सक्षम नेतृत्व में विश्वविद्यालय विकास के नये-नये प्रतिमान स्थापित कर रहा है।

पाठ्यक्रम विवरण

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

१. एम.ए./एम.फिल. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन २. एम.ए./एम.फिल. प्राकृत एवं जैन आगम ३. एम.ए. अहिंसा, शांति एवं कलह प्रबंधन ४. एम.ए./एम.एससी. जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग ५. एम.एस.डब्लू. (समाज कार्य में स्नातकोत्तर) ६. एम.ए. संस्कृत ७. एम.ए. अंग्रेजी ८. एम.ए. शिक्षा ९. एम.एड.।

प्रवेश योग्यता—स्नातकोत्तर के लिए १०+२+३ या समकक्ष परीक्षा, ५०% अंकों के साथ एम.फिल. के लिए संबंधित विषय में स्नातकोत्तर उत्तीर्ण।

स्नातक पाठ्यक्रम

१०. स्नातक कला (बी.ए.) (केवल महिलाओं के लिए) **(अ) अनिवार्य विषय :** केवल प्रथम वर्ष में—१. पर्यावरण २. सामान्य अंग्रेजी। तीनों वर्षों में—३. जैन संस्कृति और जीवन मूल्य। **(ब) वैकल्पिक विषय :** (कोई तीन) (तीनों समूहों में से केवल एक-एक विषय का चयन करना है—**समूह (अ) :** १. आगम विद्या एवं प्राकृत साहित्य २. अहिंसा एवं शांति ३. हिन्दी साहित्य ४. अंग्रेजी साहित्य। **समूह (ब) :** १. संस्कृत २. राजनीति विज्ञान ३. जीवन विज्ञान ४. अर्थशास्त्र। **समूह (स) :** १. सूचना एवं संचार तकनीकी (कम्प्यूटर) २. मनोविज्ञान ३. इतिहास ४. जैन विद्या ५. जैन तथा जैनेतर दर्शन।

११. स्नातक वाणिज्य (बी. कॉम.) (केवल महिलाओं के लिए)

प्रवेश योग्यता—१०+२ या समकक्ष परीक्षा ५०% अंकों के साथ।

१२. बी.एड. (महिलाओं के लिए) प्रवेश कामन पी.टी.ई.टी. के माध्यम से।

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

१३. पी.जी.डी.सी.ए.—प्रवेश योग्यता—१०+२+३ या समकक्ष।

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

१४. प्राकृत (६ माह) १५. कम्यूनिकेशन स्किल्स इन इंगलिश (६ माह)*

१६. जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान एवं योग (तीन माह) १७. फाउण्डेशन इन आई.टी. कन्सेप्ट्स एण्ड स्किल्स (कम्प्यूटर) (तीन माह)*

प्रवेश योग्यता (पाठ्यक्रम संख्या १४-१७ के लिए)—१० या समकक्ष

पत्राचार पाठ्यक्रम (स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम)

१. एम.ए. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन २. एम.ए./एम.एससी. जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग ३. एम.ए. हिन्दी ४. एम.ए. शिक्षा।

प्रवेश योग्यता—किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से त्रिवर्षीय स्नातक उपाधि अथवा समकक्ष।

स्नातक पाठ्यक्रम

५. ब्रिज कोर्स (एक वर्ष) (उन विद्यार्थियों के लिए १०+२+३ स्कीम के अंतर्गत स्नातक उत्तीर्ण नहीं हैं और संस्थान द्वारा संचालित एम.ए. में प्रवेश लेने के इच्छुक हैं।)

६. स्नातक (बी.ए.) **(अ) अनिवार्य विषय :** सामान्य हिन्दी या सामान्य अंग्रेजी। (केवल प्रथम वर्ष) **(ब) वैकल्पिक विषय :** (कोई दो) (प्रत्येक समूह में से केवल एक-एक विषय का चयन करना है)—**समूह (अ) :** १. आगम विद्या एवं प्राकृत साहित्य २. अहिंसा एवं शांति ३. हिन्दी साहित्य ४. अंग्रेजी साहित्य **समूह (ब) :** १. संस्कृत २. राजनीति विज्ञान ३. जीवन विज्ञान अर्हता—१०+२ या समकक्ष उपाधि या संस्थान से उसी सत्र में बी.ए. प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण।

७. बैचलर ऑफ प्रेपरेटरी प्रोग्राम (बी.पी.पी.) (उन विद्यार्थियों के लिए जो १०+२ नहीं हैं परन्तु १८ वर्ष की आयु उस सत्र में ०१ अगस्त तक पूरी करते हों।)

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

८. अहिंसा प्रशिक्षण (प्रवेश योग्यता त्रैमासिक प्रमाण पत्र के लिए १०वीं या समकक्ष) ९. ज्योतिष १०. ह्यूमन राइट्स ११. जैन आर्ट एण्ड एस्थेटिक्स*

१२. प्राकृत १३. जैन धर्म और दर्शन*

प्रवेश योग्यता (पाठ्यक्रम संख्या ०८-१३ के लिए)—१० या समकक्ष या विश्वविद्यालय से बी.पी.पी. प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण

*अंग्रेजी माध्यम पाठ्यक्रम।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र

Tel. : 01581-224332, 222230, 222110,
Fax : 223472, 222230
Website : http://www.jvbi.ac.in
e-mail : registrar@jvbi.ac.in;
office@jvbi.ac.in, dde@jvbi.ac.in

प्रेक्षाध्यान शिविर

प्रेक्षाध्यान : एक परिचय

प्रेक्षाध्यान हमारे प्राचीन ग्रंथों, आधुनिक विज्ञान और अनुभव का समन्वय है। प्रेक्षाध्यान हमारे विचारों और चेतना को शुद्ध करने का अभ्यास है तथा आत्मसाक्षात्कार की एक प्रक्रिया है। प्रेक्षाध्यान के अभ्यास के द्वारा हम अपने स्वभाव, व्यवहार और व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं। सरल शब्दों में प्रेक्षा का अर्थ है 'अपने आपको देखना, अपने शरीर, मन और आत्मा के सूक्ष्म स्पन्दनों को राग-द्वेष से मुक्त होकर केवल देखना और जानना।'

सन् १९७० में पुनःसंरचित ध्यान की विधा 'प्रेक्षाध्यान' गणाधिपतिश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अथक परिश्रम का प्रतिफल है। भगवान महावीर ने अपने साधना काल में ध्यान के जिन प्रयोगों का अभ्यास किया था आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने २० वर्षों तक शोध और अभ्यास कर प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत उन्हें व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया। प्रेक्षाध्यान जाति, धर्म, रंग और लिंग के भेदभाव के बिना किसी भी व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। प्रेक्षाध्यान पद्धति सहज, सरल और बिना किसी कठिनाई के सीखी जा सकती है।

देश-विदेश में प्रेक्षाध्यान के हजारों शिविर एवं सेमिनारों का आयोजन हो चुका है। विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े लगभग ५,५०,००० लोगों ने इसके प्रयोगों का अभ्यास कर आंतरिक परिवर्तन का अनुभव किया है। नियमित अभ्यास से और निखरने वाला यह प्रयोग आज मानव जीवन के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है।

प्रेक्षाध्यान की निष्पत्ति क्या है?

प्रेक्षाध्यान की मुख्य निष्पत्ति है—चित्त की शुद्धि। हमारे जीवन में संतुलन, आनन्द और शान्ति का अनुभव उपलब्ध कराने में प्रेक्षाध्यान प्रमुख भूमिका निभाता है। मानसिक तनावों से मुक्ति, ऊर्जा के रूपान्तरण, चेतना के ऊर्ध्वारोहण और एकाग्रता के विकास के लिए प्रेक्षाध्यान वास्तव में जीवन का वरदान है। व्याधि, आधि और उपाधि को समाप्त करने वाला प्रेक्षाध्यान समाधि का प्रवेशद्वार है। इसके साथ-साथ विभिन्न रोगों के उपचार के लिए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग लाभदायक हैं। इस संदर्भ में विशद जानकारी तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा 'प्रेक्षाध्यान' मासिक-पत्र का प्रकाशन सन् १९७८ से नियमित हो रहा है।

प्रेक्षाध्यान शिविर में ध्यान के विभिन्न प्रयोग, योगासन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, मंत्र ध्यान आदि के प्रयोग करवाये जाते हैं।

शान्ति और अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए अपनी चेतना के ऊर्ध्वारोहण के लिए यही क्षण है निर्णय लेने का।

क्या आप तैयार हैं.....

—: विशेष जानकारी के लिए संपर्क :—

प्रेक्षा फाउण्डेशन

तुलसी अध्यात्म नीडम्

जैन विश्व भारती, लाडनूं ३४१३०६

फोन न. ०१५८१-२२२११९, २२२०२५, मो. ९६६७२३४३९८

E-mail : needam@preksha.com,

Website : www.preksha.com

जीवन विज्ञान

आचार्य महाप्रज्ञ प्रणीत 'जीवन विज्ञान' जीवन जीने की कला सिखाता है। स्वस्थ समाज रचना के लिए स्वस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण की अपेक्षा है। व्यक्तित्व की समग्रता केवल बौद्धिक विकास में नहीं है, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सर्वाधिक बल इसी पर दिया जा रहा है, समग्र विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास भी आवश्यक है। जीवन विज्ञान बौद्धिक ज्ञान की उपेक्षा नहीं करता परन्तु इसके साथ व्यक्तित्व विकास के अन्य आयामों पर भी पर्याप्त बल देने की बात करता है। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पूरक के रूप में जुड़ कर व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। अत: शिक्षा की सम्पूर्णता के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा में जीवन विज्ञान का समावेश हो।

जीवन विज्ञान के उद्देश्य

१. जीवन के परिष्कार द्वारा आध्यात्मिक और वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण करना।
२. जीवन विज्ञान, योग द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भावात्मक प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन करना।
३. जीवन के उन नियमों एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन एवं अन्वेषण करना, जिससे जीवन के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष का परिष्कार होता है।
४. स्वस्थ समाज की रचना के लिए ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों हेतु स्वस्थ जीवन की प्रायोगिक एवं अभ्यासात्मक प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत कर सके। साथ ही इसके माध्यम से वह समग्र एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में सहभागी बन सके।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षा के इस क्रांतिकारी आयाम को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए जीवन विज्ञान अकादमी प्रारम्भ से जैन विश्व भारती के अंतर्गत कार्यरत है। इस अकादमी के प्रयासों से देशभर में अनेक अकादमियां स्थापित हो चुकी हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में जीवन विज्ञान का विकास और प्रचार-प्रसार कर रही है।

जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम

जीवन विज्ञान के अंतर्गत व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य के समुचित विकास हेतु आधुनिक और प्राचीन विद्याओं के समावेश से परिपूर्ण अन्तर्विषयानुबंधी पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। विद्यालयीन स्तर पर जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम का प्रारूप निम्नानुसार है–

१. प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान।
२. प्रत्येक कालांश में विषय शिक्षण से पूर्व लघु प्रवृत्तियां।
३. मुख्यधारा के विषय के रूप में (प्रारम्भ से कक्षा १२ तक)।
४. पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियां।

पाठ्य सामग्री

जीवन विज्ञान : एक परिचय, जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज की संरचना, जीवन विज्ञान : शिक्षा का नया आयाम, शिक्षा जगत् के लिए जरूरी है नया

चिंतन, जीवन विज्ञान : शिक्षक प्रशिक्षक मार्गदर्शिका, जीवन विज्ञान : शिक्षक निर्देशिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान लघु पुस्तिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का केलेण्डर, जीवन विज्ञान : संस्कारमाला (नर्सरी से कक्षा २ तक), बालक का व्यक्तित्व विकास और मूल्यपरक शिक्षा के प्रयोग, जीवन विज्ञान की रूपरेखा, जीवन विज्ञान पाठ्यपुस्तकें : कक्षा ३ से १२ तक, सहशैक्षिक प्रवृत्तियों के लिए जीवन विज्ञान प्रश्नमंच एवं केरियर क्लब, संवादों में जीवन विज्ञान, जीव विज्ञान प्रायोगिकी आदि। (पाठ्यपुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी सहित गुजराती, कन्नड़, तेलुगु आदि कुछ प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध है।)

जीवन विज्ञान से लाभ

१. बौद्धिक और भावनात्मक विकास का संतुलन।
२. आवेग और आवेश का संयम।
३. आत्मानुशासन की क्षमता का विकास।
४. जीवन व्यवहार निश्छल एवं मैत्रीपूर्ण।
५. मादक वस्तुओं के सेवन से मुक्ति।
६. स्वस्थ जीवन जीने का मार्ग।
७. नैतिक मूल्यों का विकास।
८. पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अच्छे ढंग से जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण।
९. जीवन की समस्याओं के समाधान की खोज।
१०. स्व-शक्ति से परिचय एवं उसके उपयोग की दक्षता।

जीवन विज्ञान जारी है

१. राजस्थान, दिल्ली, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा स्वीकृत एवं संचालन की अनुमति।
२. एन.सी.ई.आर.टी. पूना द्वारा स्वीकृत प्रयोजना में जीवन विज्ञान सम्मिलित।
३. एन.आई.ओ.एस. के पाठ्यक्रमों में जीवन विज्ञान का छःमाही कोर्स प्रारम्भ।
४. बोकारो स्टील सिटी द्वारा संचालित सभी विद्यालयों में अनिवार्य विषय के रूप में जारी।

वार्षिक आयोजन

१. जीवन विज्ञान दिवस (१३ नवम्बर २०११)
२. संस्कारण निर्माण प्रतियोगिता
३. जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर
४. जीवन विज्ञान प्रशिक्षक सेमीनार

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

जीवन विज्ञान अकादमी
जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं-३४१ ३०६, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन : ०१५८१-२२२११९
फैक्स : ०१५८१-२२३२८०
ई-मेल : jeevanvigyanacademy@gmail.com
वेब-साईट : jeevanvigyan.org

जीवन विज्ञान अन्तरराष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान

गत वर्ष आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में जीवन विज्ञान अन्तरराष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान (Jeevan Vigyan International Research and Training Institute) के नाम से जैन विश्व भारती परिसर में युगानुकूल अपेक्षाओं के अनुरूप एक भव्य भवन का निर्माण प्रारम्भ हुआ। जीवन विज्ञान के क्षेत्र में शोध करने वालों एवं प्रशिक्षण की दृष्टि से यह संस्थान आने वाले समय में महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर बनेगा, ऐसा विश्वास है।

महाश्रमण का जो अभिनंदन किया जा रहा है, वह कोई सम्राट् का नहीं श्रम का अभिवादन है।

–आचार्य महाप्रज्ञ

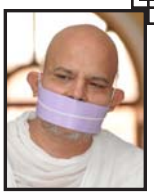

अमित सिन्थेटिक्स

४०२, आनन्द मार्केट, रिंग रोड

सूरत ३९५००२

फोन : (०२६१) २३३६६५१/२३२२०७६

श्रद्धावनत : जसकरन हंसराज चौपड़ा (गंगाशहर–सूरत)

With Best Compliments

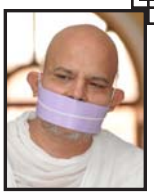

Ratan Lal Budhmal Jodhraj Baid
RATANGARH

ABCI

ABCI INFRASTRUCTURES PVT. LTD.

ADMN. OFFICE : Club Road, Silchar 788 001 (Assam)
Phone : (03842) 247957, 247471, 236717, Fax : 03842-236054
e-mail : silchar@abciinfra.com

REGD. OFFICE : 'Vasundra' 6th floor, Room No. 4
2/7, Sarat Bose Road, Kolkata 700 020
Phone : 4003 3072, 4003 3073, Fax : (033) 4003 3071
e-mail : kolkata@abciinfra.com

DELHI
204, South Delhi House
12, Zamrudhpur Community Centre
Kailash Colony, **New Delhi** 110048
Ph. : 2923-4131, Fax : (011) 2923-2405
e-mail : delhi@abciinfra.com

GUWAHATI
1/3, Macdonalt Tower, 1st Floor,
G.S. Road, Bhangaghar,
Guwahati 781005
Ph. : 2464054, Fax : (0361) 2458819
e-mail : guwahati@abciinfra.com

AIZAWL
Zarkhawt, Aizawl
Ph. : 234-8804, 234-1004
Fax : 234 3148
e-mail : aizawl@abciinfra.com

महाश्रमण ने अपनी योग्यता से सिद्ध कर दिया कि तुलसी-महाप्रज्ञ का चिन्तन सौ नहीं बल्कि सवा सौ प्रतिशत सही है।

–आचार्य महाप्रज्ञ

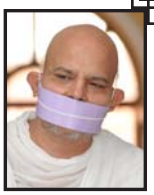

श्रद्धावनत

मोहनलाल किशोर कुमार गादिया

रामसिंह का गुड़ा-बैंगलोर

अपनी इच्छाओं को सीमित करो, दुःख भी सीमित हो जाएंगे।
–आचार्य महाश्रमण

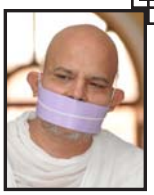

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा

मुम्बई

भंवरलाल एम. जैन (कर्णावट)
अध्यक्ष

दिनेश सुतरिया
मंत्री

Goodluck Commercial Service

(Quick & Efficient Courier Service)

Carrying Documents, Tea Samples, Cloth Samples & other Valuable Goods

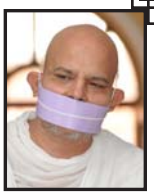

91, Netaji Subhash Road, Kolkata 700001 **210, Mahatma Gandhi Road, Kolkata 700007**

Ph. : (033) 2243-1086, 2268-1336, Fax : 2270-7424

R No. 158, Ist Floor, Swadeshi Market
316 Kalbadevi Road, Mumbai 400002
Ph. : 022-22088728, 22092311

5 No. Khanna Market, Tishazari, Delhi 110054
Ph. : 011-23967660, 23971677

Mahavir Bhawan, A.T. Road, Gauhati 780001
Ph. 0361-2514839, 2636877

228, Sevoke Road, Ist Floor,
Siliguri 734001
Ph. : 0353-2522765, 3204917

Goodluck Apparels

242, Hemilton Road, 2nd Floor
Krishnapura, Indore 452001
Ph. : 0731-2304223

Visit us at www.goodluckcourier.com *Enquiry for Franchise will be Soliocited*

Shyamsukha Parivar, Sri Dungargarh (Raj.)

महाश्रमण जैसा उत्तराधिकारी पाकर मुझे परम संतोष का अनुभव हो रहा है।

–आचार्य महाप्रज्ञ

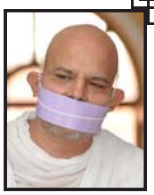

श्रद्धाप्रणत्

दीपक–वर्षा दुगड़
प्रकाश, विवेक दुगड़

रूपचंद–सरोजदेवी दुगड़
कोडामल–बुलबुलदेवी दुगड़
जैनसुख–राजूदेवी दुगड़

झमकूदेवी-हड़मानमल चोरड़िया

कमलादेवी-स्व. लक्ष्मीचंद बरमेचा

❖

माणकचंद रूपचंद दुगड़ चैरिटेबल ट्रस्ट

बीदासर–मुम्बई

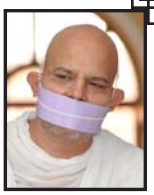

महाश्रमण जैसा उत्तराधिकारी मिलना मेरा सौभाग्य है, संघ का सौभाग्य है।
–आचार्य महाप्रज्ञ

स्व. वस्तीमलजी-सारीबाई एवं ताराचंदजी छाजेड़ की पुण्य स्मृति में
मनोहर, **'शासनसेवी'** मांगीलाल-विमला देवी,
शांतिलाल, संजय-मंजु, मनीष-मीना, नवीन-चेतना छाजेड़
सिरियारी-बैंगलोर

श्रा. मांगीलाल शांतिलाल एण्ड कम्पनी, बैंगलोर
महाप्रज्ञ सिल्क पैलेस, बैंगलोर

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

परोपकार को समर्पित
साधक के 50 वर्ष

श्रद्धाप्रणत
मदनलालदीपककुमार
बीदासर
गुवाहाटी

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
श्रीमती जसीदेवी बैंगानी
के १७वें वर्षीतप के उपलक्ष में
बैंगानी परिवार का
भावभरा समर्पण

BHARAT TRADING CORPORATION
श्री M.B. LITES
Lakhtakia–Guwahati
Mobile : 94351 84893